A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 3 अप्रैल, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 210, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

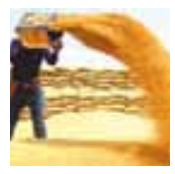

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

माओवादी मुक्ति से शांति एवं संतुलन की नई संभावनाएं

ललित गर्ग

भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और लोकतांत्रिक राष्ट्र के सामने आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां हमेशा से बहुआयामी रही हैं। इन चुनौतियों में नक्सलवाद या माओवादी हिंसा एक ऐसी समस्या रही, जिसने दशकों तक देश की आंतरिक शांति, विकास और सुशासन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। विशेषकर छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बिहार और आंध्र प्रदेश के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में माओवादी गतिविधियों ने न केवल विकास को अवरुद्ध किया, बल्कि हजारों निर्दोष नागरिकों और सुरक्षाकर्मियों की जान भी ली। लेकिन आज जब बस्तर जैसे माओवादी गढ़ से 25 लाख के इनामी सरगना पापा राव का अपने साथियों सहित आत्मसमर्पण करना एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आया है, तब यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत माओवादी मुक्ति की ऐतिहासिक दहलीज पर खड़ा है। नक्सलवाद की जड़ें सामाजिक-आर्थिक असमानता, उपेक्षा और शोषण में रही हैं, लेकिन समय के साथ यह आंदोलन अपने मूल उद्देश्यों से भटककर एक हिंसक और विध्वंसकारी विचारधारा में बदल गया। माओवादी संगठन न केवल विकास कार्यों में बाधा डालते रहे, बल्कि उन्होंने स्थानीय लोगों को भय और हिंसा के माध्यम से नियंत्रित किया। स्कूल, सड़क, स्वास्थ्य केंद्र जैसे बुनियादी ढांचे को नष्ट करना उनकी रणनीति का हिस्सा बन गया था। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह आंदोलन अब जनहित का नहीं, बल्कि सत्ता और नियंत्रण का माध्यम बन चुका है।

भारत सरकार द्वारा 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद/माओवाद से मुक्त करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, वह अब लगभग अपनी अंतिम अवस्था में पहुंचता दिखाई दे रहा है। पिछले एक दशक में 10 हजार से अधिक माओवादियों के आत्मसमर्पण, सुरक्षा बलों की आक्रामक एवं रणनीतिक कार्रवाई तथा प्रभावित क्षेत्रों में तेज़ी से हुए विकास कार्यों ने माओवादी आंदोलन की जड़ों को कमजोर कर दिया है। छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में माओवादी हिंसा की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष रूप से शीर्ष नेतृत्व के आत्मसमर्पण, जैसे दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के सदस्यों के सरेंडर ने संगठन को नेतृत्वहीन कर दिया, जिससे माओवादी संरचना भीतर से कमजोर पड़ गई। इस सफलता के पीछे सरकार की बहुआयामी रणनीति रही, जिसमें केवल सैन्य-पुलिस कार्रवाई ही नहीं, बल्कि विकास, पुनर्वास और प्रशासनिक पहुंच को भी समान महत्व दिया गया। रेड कॉरिडोर क्षेत्रों में सड़कों और पुलों का निर्माण, मोबाइल टावरों के माध्यम से 4जी नेटवर्क का विस्तार, स्कूलों और आईटीआई संस्थानों की स्थापना ने इन क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ा। वहीं 'फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशनों' की रणनीति के माध्यम से सुरक्षा बलों ने माओवादियों के गढ़ों में घुसकर निर्णायक कार्रवाई की। आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों के लिए पुनर्वास नीति के तहत आर्थिक सहायता, रोजगार और समाज में पुनर्स्थापना की व्यवस्था ने भी माओवादी कैडर को हथियार छोड़ने के लिए प्रेरित किया। यह समन्वित रणनीति, दूरदर्शिता और दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम है कि देश आज नक्सलवाद के अंत के ऐतिहासिक चरण के निकट खड़ा दिखाई दे रहा है।

निश्चित ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी और दृढ़ रणनीति अपनाई। गृहमंत्री अमित शाह की सूझबूझ और स्पष्ट दृष्टिकोण ने इस अभियान को एक नई दिशा दी। सरकार ने एक ओर जहां सुरक्षा बलों को आधुनिक तकनीक, बेहतर प्रशिक्षण और संसाधनों से सशक्त किया, वहीं दूसरी ओर विकास योजनाओं को भी गति दी। 'सुरक्षा और विकास' के इस दोहरे दृष्टिकोण ने माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखी। पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षाबलों द्वारा चलाए गए सघन अभियानों ने माओवादी नेटवर्क को गहराई से कमजोर किया है। पापा राव जैसे शीर्ष माओवादी नेता का आत्मसमर्पण इस बात का संकेत है कि माओवादी संगठन अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह एक व्यक्ति का ही नहीं, एक विचारधारा का भी समर्पण है।

माओवादी मुक्ति का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि देश के उन क्षेत्रों में शांति और स्थिरता स्थापित होगी, जो लंबे समय से हिंसा की चपेट में रहे हैं। जब बंदूकें खामोश होंगी, तब विकास की आवाज बुलंद होगी। सड़कें बनेंगी, स्कूल खुलेंगे, अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ेंगी और सबसे महत्वपूर्ण, लोगों के जीवन में सुरक्षा और विश्वास का संचार होगा। आदिवासी और ग्रामीण समुदाय, जो अब तक भय और असुरक्षा में जी रहे थे, वे अब अपने अधिकारों और अवसरों का पूर्ण लाभ उठा सकेंगे। इसके साथ ही, माओवादी हिंसा के समाप्त होने से भारत की आंतरिक सुरक्षा मजबूत होगी। जब देश के भीतर शांति होगी, तब ही बाहरी खतरों का प्रभावी ढंग से सामना किया जा सकता है। नक्सलवाद जैसी समस्याएं अक्सर विदेशी शक्तियों और असामाजिक तत्वों के लिए भी अवसर प्रदान करती हैं, जिन्हें समाप्त करना राष्ट्रीय हित में अत्यंत आवश्यक है। इस दृष्टि से माओवादी मुक्ति न केवल आंतरिक, बल्कि सामरिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।

आदर्श शासन व्यवस्था की स्थापना के लिए कानून का शासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और विकास की समान पहुंच आवश्यक होती है। माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में इन सभी तत्वों का अभाव था। वहां प्रशासन की पहुंच सीमित थी और लोकतांत्रिक संस्थाएं प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर पा रही थीं। लेकिन अब जब माओवादी प्रभाव घट रहा है, तब सरकार के लिए यह अवसर है कि वह इन क्षेत्रों में सुशासन की मजबूत नींव रखे। पंचायतों को सशक्त किया जाए, स्थानीय नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जाए और जनभागीदारी को बढ़ावा दिया जाए। यह भी आवश्यक है कि माओवादी विचारधारा के प्रभाव को केवल सुरक्षा उपायों से ही नहीं, बल्कि वैचारिक स्तर पर भी चुनौती दी जाए। शिक्षा, जागरूकता और संवाद के माध्यम से लोगों को यह समझाना होगा कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकती। लोकतंत्र में परिवर्तन का मार्ग शांतिपूर्ण और संवैधानिक होता है। इस दिशा में समाज, सरकार और नागरिक संगठनों को मिलकर प्रयास करना होगा। माओवादी मुक्ति के इस दौर में यह भी ध्यान रखना होगा कि जिन कारणों से यह समस्या उत्पन्न हुई थी, वे दोबारा न उभरें। सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और विकास की समावेशी नीति को प्राथमिकता देना आवश्यक है। आदिवासी क्षेत्रों में उनकी संस्कृति, पहचान और अधिकारों का सम्मान करते हुए विकास की योजनाएं लागू की जानी चाहिए। केवल भौतिक विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में जिस दृढ़ता और दूरदर्शिता के साथ माओवादी समस्या का समाधान किया जा रहा है, वह न केवल वर्तमान के लिए, बल्कि भविष्य के लिए भी एक मार्गदर्शक है। यह दिखाता है कि यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत हो, रणनीति स्पष्ट हो और कार्यान्वयन प्रभावी हो, तो कोई भी समस्या असाध्य नहीं है। निश्चित तौर पर माओवादी मुक्ति केवल एक सुरक्षा उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र, विकास और सुशासन की जीत है। यह उस विश्वास का प्रतीक है कि भारत अपने आंतरिक संघर्षों को शांतिपूर्ण और निर्णायक ढंग से सुलझाने में सक्षम है। अब समय है कि इस उपलब्धि को स्थायी बनाया जाए और देश के हर कोने में शांति, समृद्धि और संतुलन का वातावरण स्थापित किया जाए। जब हर नागरिक सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त महसूस करेगा, तभी सच्चे अर्थों में एक आदर्श शासन व्यवस्था का निर्माण संभव हो सकेगा।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों से मुलाकात और चर्चा की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्रियों और राज्य के संसद सदस्यों से मुलाकात कर प्रदेश के विकास संबंधी योजनाओं पर चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केन्द्रीय संचार और उत्तर पूर्वी विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार से मुलाकात की। उन्होंने केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और संसदीय मामलों के राज्यमंत्री डॉ. एल. मुरुगन, केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके, केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर से भी मुलाकात की। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष एवं वरिष्ठ विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल के साथ श्री महेन्द्र सिंह भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इसके पहले मध्यप्रदेश के सांसदों से विकास के विभिन्न मुद्दों पर वन-टू-वन चर्चा की। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में केंद्र प्रवर्तित योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में संसद सदस्यों के साथ मध्यप्रदेश भवन में हुई बैठक में विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।

शरद की सुबह

काश दिल की बात मैं माना न होता
तो कम-अज-कम इतना दीवाना न होता।
मौत है तब यह क़यामत ढा रहा है
क्या बशर करता जो मर जाना न होता।
हम भी होते मस्त, फक्कड़, बेनियाज़ी
कुछ जहाँ में हमको गर पाना न होता।
घूमते फिरते अँधेरी राह पर ही
राहबर का सच अगर जाना न होता।
बात दिल की करते सब दिल खोल कर हम
आपको जल्दी अगर जाना न होता।
अहले-दिल की ही अगर होती निज़ामत
कोई मस्जिद, गिरजा, बुतखाना न होता।

- **दिनेश मालवीय 'अश्क'**

भोजशाला मामले में 6 अप्रैल से रोज सुनवाई

- **सभी याचिकाओं पर एक साथ दलीलें सुनेगा हाईकोर्ट, एएसआई की सर्वे रिपोर्ट पर आपत्तियां रखेगा मुस्लिम पक्ष**

इंदौर/धार (नप्र)। धार के भोजशाला विवाद मामले में 6 अप्रैल से रोज सुनवाई होगी। हाईकोर्ट के जस्टिस विजय कुमार शुक्ला और जस्टिस आलोक अवस्थी की बेंच सोमवार दोपहर ढाई बजे से सभी याचिकाओं को एक साथ सुनेगी।

गुरुवार को हुई सुनवाई में अदालत ने स्पष्ट किया है कि पहले याचिकाकर्ताओं के तर्क सुने जाएंगे, फिर आपत्ति लगाने वालों को दलील रखने का अवसर दिया जाएगा।

सुनवाई के दौरान हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की ओर से वकील विष्णु शंकर जैन, विनय जोशी मौजूद रहे जबकि मौलाना कमालुद्दीन वेलफेयर सोसायटी की ओर से एडवोकेट सलमान खुर्शीद वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े थे।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- हाईकोर्ट ही करेगा अंतिम फैसला- इससे पहले बुधवार को सुप्रीम कोर्ट ने भोजशाला विवाद में अहम आदेश देते हुए स्पष्ट किया था कि मामले का अंतिम निर्णय अब हाईकोर्ट ही करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की सर्वे रिपोर्ट, वीडियोग्राफी और पक्षकारों की आपत्तियों पर हाईकोर्ट अंतिम सुनवाई में विचार करेगा। सभी मुद्दे हाईकोर्ट के समक्ष खुले रहेंगे और वहीं तय किए जाएंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- एएसआई द्वारा तैयार की गई सर्वे रिपोर्ट सभी पक्षों को उपलब्ध करा दी गई है। कई पक्षों ने इस पर अपनी आपत्तियां भी दर्ज कराई हैं। एएसआई द्वारा की गई साइट की वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी से जुड़े बिंदुओं को भी हाईकोर्ट गंभीरता से देखेगा। यदि वीडियोग्राफी के आधार पर कोई नई आपत्तियां उठती हैं, तो उन पर भी सुनवाई के दौरान विचार किया जाएगा।

इसके अलावा शीर्ष कोर्ट ने पहले दिए गए निर्देश को बरकरार रखते हुए कहा था कि भोजशाला परिसर के स्वरूप में कोई बदलाव नहीं किया जाएगा। साथ ही, 7 अप्रैल 2003 को एएसआई द्वारा जारी आदेश का पालन जारी रहेगा।

पश्चिम बंगाल की धरती पर सीएम मोहन यादव की दहाड़

ममता अब दीदी नहीं, 'अप्पी' हो गई हैं

बांग्लादेशी पश्चिम बंगाल आकर हो रहे मालामाल, यहां के मूल निवासियों को रोजगार के लिए करना पड़ रहा पलायन

भोपाल (नप्र)। पश्चिम बंगाल में विदेशी घुसपैठिये आकर हमारे अधिकारों पर कब्जा कर रहे हैं। बांग्लादेशी घुसपैठिये यहां आकर मालामाल हो रहे हैं। पश्चिम बंगाल के मूल निवासी ममता राज में ओडिशा, झारखंड, महाराष्ट्र के लिए पलायन कर बेरोजगारी झेल रहे हैं। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के प्रचार में एमपी सीएम मोहन यादव की एंट्री हो गई है। सीएम मोहन यादव बांकुरा में बीजेपी प्रत्याशियों के नामांकन में शामिल हुए। साथ ही सभा को संबोधित करते हुए बीजेपी प्रत्याशियों के पक्ष में वोट डालने की अपील की है। उन्होंने कहा कि ममता दीदी के राज में सब परेशान हैं। ममता अब दीदी नहीं है, ये अप्पी हो गई हैं। ये बात पूरे देश में सुनाई दे रही है।

पश्चिम बंगाल में हो रहे चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि एक तरफ देशभक्त और दूसरी तरफ विदेशी घुसपैठियों की यह लड़ाई है। बांग्लादेश के लोगों के लिए हमारे देश में कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के पश्चिम बंगाल में चुनावी रिजल्ट आने वाला है और बीजेपी जीतने वाली है, यह आपके चेहरे का नूर बता रहा है। यादव ने कहा कि आज बंगाल का युवा महिला, गरीब, किसान सब उठकर खड़े हुए हैं और अपनी आन, बान और शान के लिए तैयार हैं।

कांग्रेस विधायक राजेंद्र भारती को तीन साल की सजा

- **एमपी-एमएलए कोर्ट ने दी जमानत, एफडी की हेराफेरी मामले में पाए गए दोषी**

दतिया (नप्र)। दतिया से कांग्रेस विधायक राजेंद्र भारती को 27 साल पुराने एफडी हेराफेरी मामले में दोषी करार दिया है। गुरुवार को कोर्ट ने उन्हें 3 साल की सजा सुनाई और जमानत दे दी।

उन्हें आपराधिक साजिश (धारा 120बी) और धोखाधड़ी व जालसाजी (धारा 420, 467, 468, 471) में दोषी माना गया है। सह-आरोपी बैंक लिपिक रघुवीर प्रजापति को भी दोषी ठहराया गया है।

कोर्ट ने दो धाराओं में 3-3 साल और एक धारा में 2 साल की सजा सुनाई है। इससे उनकी विधायकी पर खतरा बना हुआ है। वरिष्ठ वकीलों के अनुसार अपील के लिए उन्हें 60 दिन मिलेंगे।

अगर हाईकोर्ट से सजा पर स्थगन (स्टे) मिल जाता है, तो उनकी विधायकी बरकरार रह सकती है। फिलहाल उनकी सदस्यता पर संकट बना हुआ है।

फर्जी दस्तावेजों से एफडी का ब्याज निकाला- घटनाक्रम की शुरुआत 1998 से शुरू होती है। श्याम सुंदर संस्थान की अध्यक्ष सावित्री श्याम (राजेंद्र भारती की मां) ने दतिया सहकारी ग्रामीण विकास बैंक में 10 लाख रु. की एफडी की थी। साल 1998 से 2001 के बीच राजेंद्र भारती उसी बैंक के संचालक मंडल के अध्यक्ष थे।

इंडियन करेंसी की 12 साल में सबसे लंबी छलांग

डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए को लग गए पंख

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रुपये में हाल में पिछले हफ्ते काफी गिरावट आई थी और यह डॉलर के मुकाबले 95 के पार पहुंच गया था। लेकिन आज इसमें काफी तेजी आई। रुपया डॉलर के मुकाबले करीब 2 प्रतिशत तक मजबूत होकर 92.94 पर पहुंच गया, जो सितंबर 2013 के बाद इसमें एक दिन में आई सबसे बड़ी तेजी है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने डॉलर के मुकाबले रुपये में तेज गिरावट के बीच बुधवार को अधिकृत डीलरों के लिए कई नए कदमों की घोषणा की थी। ये निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू हो गए हैं।

मार्च में रुपये में 4 फीसदी गिरावट आई थी जो छह साल में एक महीने में आई सबसे बड़ी गिरावट है। केंद्रीय बैंक ने एक अधिसूचना में कहा कि अधिकृत डीलर यानी विदेशी मुद्रा लेनदेन की अनुमति वाले बैंक अब रुपये से जुड़े नॉन-डिलीवेरेबल डेरिवेटिव (एनडीडी) अनुबंधों की पेशकश निवासी और अनिवासी ग्राहकों के लिए नहीं कर सकेंगे। इस कारण आज रुपये में तेजी देखने को मिली।

हालांकि, अधिकृत डीलर बैंकों को डिलीवेरेबल विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव अनुबंध पेश करने की अनुमति जारी रहेगी, ताकि ग्राहक जोखिम से बचाव की अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। इसके साथ शर्त यह है कि ग्राहक इसके समानांतर नॉन-डिलीवेरेबल सौदे नहीं कर सकेंगे।

आरबीआई ने यह भी निर्देश दिया कि अधिकृत डीलर बैंक ऐसे किसी भी विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव अनुबंध को दोबारा बुक नहीं कर सकेंगे, जिसे इन निर्देशों के लागू होने के बाद रद्द किया गया हो। नियमों के अनुपालन के लिए बैंक ग्राहकों से आवश्यक जानकारी या दस्तावेज मांग सकते हैं। इसके अलावा, डीलर बैंकों को अपने संबंधित पक्षों के साथ किसी भी तरह के विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव सौदे करने से रोक दिया गया है। संबंधित पक्ष की परिभाषा भारतीय लेखा मानक (इंड एएस) 24 या अंतरराष्ट्रीय मानक (आईएएस) 24 के अनुरूप तय होगी।

यह कदम ऐसे समय उठाया गया है जब रुपया हाल ही में कारोबारी सत्र के दौरान 95 रुपये प्रति डॉलर के मनोवैज्ञानिक स्तर को भी पार कर गया था। इससे पहले, आरबीआई ने अधिकृत डीलर बैंकों के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में रुपये की नेट ओपन पोजीशन (विदेशी मुद्रा में कुल खरीद और बिक्री के बीच का अंतर) पर 10 करोड़ डॉलर की सीमा भी तय की थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 3 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

संभल एसपी के रिसेप्शन में गए सपा विधायकों से अखिलेश नाराज

- सपा चीफ बोले-उन्हें नहीं जाना चाहिए था,बातचीत करके समझाएंगे

लखनऊ (एजेंसी)। संभल एसपी के रिसेप्शन में सपा नेताओं के शामिल होने पर अखिलेश यादव ने कहा कि उन्हें इसमें शामिल नहीं होना चाहिए था। बातचीत कर उन्हें समझाया जाएगा। दरअसल, संभल एसपी केके बिश्नोई और आईपीएस अंशिका वर्मा की शादी के बाद हुए रिसेप्शन में समाजवादी पार्टी के तीन विधायक और जिलाध्यक्ष शामिल हुए थे। गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री ने सपा की एक बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कई मुद्दों पर योगी सरकार को घेरा। कानपुर में सामने आए कथित किडनी मामले का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री को

वास्तविक समस्याओं का अंदाजा नहीं है और वे विपक्ष की रैलियों को फ्लॉप बताने में लगे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि नकली नोट और किडनी कांड में भाजपा के लोग शामिल हैं। कहा- भाजपा के लोग सपा शासन की परियोजनाओं का भी श्रेय लेने में लगे है। एक बात वो भूल ही गए कि जब से वो बने हैं, एक वनस्पति का विकास बहुत हुआ है। 200 किलो फिर पकड़ा गया है। गांजा गंज पर मूवी बनेगी। धुआं धर पर भी फिल्म बननी चाहिए।

चुनाव खत्म होते ही पूरी भाजपा की बटालियन यूपी में जुट जाएगी- सपा प्रमुख ने कहा- जैसे ही चुनाव समाप्त होंगे, पूरी भाजपा की फौज यूपी में आ जाएगी। हम लोग दूर से देख रहे हैं जहां चुनाव हो रहा है, वहां बीजेपी और चुनाव आयोग मिलकर क्या काम कर रहे हैं। उन्होंने बंगाल का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां कई अधिकारियों को हटाया गया, लेकिन उत्तर प्रदेश में चुनाव के दौरान ऐसा नहीं किया गया।

नीतिश को इस्तीफे के बाद भी मिलेगी जेड+सिक्योरिटी

- सीएम से मिले तेजस्वी के बागी विधायक,14 अप्रैल के बाद बन सकती है नई सरकार

पटना (एजेंसी)। बिहार की सियालत में जल्द ही बड़ा उलटफेर होने वाला है। सूत्रों के अनुसार, सीएम नीतीश 10 अप्रैल को राज्यसभा की सदस्यता ग्रहण करेंगे। इसके बाद 14 अप्रैल को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे सकते हैं। इसके साथ ही 18 तारीख तक बिहार में नई सरकार का गठन होगा। सीएम के इस्तीफे की चर्चाओं के बीच उनकी सिक्योरिटी को लेकर बड़ा फैसला किया गया है। मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे के बाद भी नीतिश कुमार को जेड+ कैटेगरी की सिक्योरिटी मिलेगी। बिहार सरकार के गृह विभाग ने इसे लेकर अधिसूचना जारी की है। इस अधिसूचना में नीतिश कुमार के

मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे भी का जिक्र है। लेटर में लिखा गया है, बिहार विधान परिषद के सदस्य और मुख्यमंत्री बिहार के पद से त्याग-पत्र देकर राज्यसभा सदस्य की सदस्यता ग्रहण करेंगे। इधर, तेजस्वी के बागी विधायक फैसल रहमान ने गुरुवार को सीएम हाउस में नीतिश कुमार से मुलाकात की।16 मार्च को हुए राज्यसभा चुनाव में ढाका विधायक फैसल रहमान वोट देने नहीं पहुंचे थे। गृह विभाग की ओर से जारी नोटिफिकेशन के अनुसार, नीतिश कुमार को बिहार स्पेशल सिक्योरिटी एक्ट-2000 के तहत सुरक्षा का योग्य माना गया है। ये कानून विशिष्ट व्यक्तियों को उनकी संवेदनशीलता के आधार पर सुरक्षा कवर प्रदान करने का अधिकार देता है। विभाग ने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल और वर्तमान राजनीतिक स्थिति की समीक्षा के बाद सुरक्षा को लेकर ये कदम उठाया गया है। पुलिस महानिदेशक के नाम लिखे गए पत्र में कहा गया, नीतिश कुमार को सुरक्षा दी जाएगी।

टोल का संचालन एवं सड़क की मरम्मत का कार्य अब एमपीआरडीसी द्वारा कराया जाएगा

सेंधवा। टोल प्लस एन्युटी योजनांतर्गत निर्मित सेंधवा से व्हाया पलसुद बड़वानी राज्य राजमार्ग क्रं. 39 की बदहाली को लेकर की गई शिकायतों के पश्चात मुख्य अभियंता (बीओटी) म.प्र. सड़क विकास निगम भोपाल द्वारा कंसेशनायर (रियायतग्राही) के कंसेशन एग्रीमेन्ट (छुट अनुबंध) को निलंबित करते हुवे टोल प्लाजा को 1 अप्रैल 26 से एमपीआरडीसी ने अपने आधिपथ्य में ले लिया है। टोल का संचालन एवं सड़क की मरम्मत का कार्य अब एमपीआरडीसी द्वारा कराया जावेगा।

यह जानकारी सामाजिक कार्यकर्ता एवं अधिवक्ता बी.एल.जैन द्वारा देते हुए बताया गया कि उनके द्वारा 11 एवं 22 जनवरी तथा 16 व 22 मार्च 26 को मुख्यमंत्री, लोकनिर्माण मंत्री, प्रबंध संचालक एमपीआरडीसी, मुख्य अभियंता भोपाल व कलेक्टर बड़वानी को शिकायत प्रेषित कर उन्हे अवगत कराया गया था कि टोल प्लस एन्युटी योजनांतर्गत 57 कि.मी. मार्ग का निर्माण सन् 2012 मे 15 वर्ष की कंसेशन अवधि के लिए किया गया

था, जिसकी अवधि दि. 05 दिसम्बर 26 को समाप्त हो रही है। उक्त योजना के तहत सड़क बनाने वाली कम्पनी को टोल वसूली के अतिरिक्त शासन द्वारा प्रति 6 माह में निर्धारित राशि भी प्रदान की जाती है बावजूद इसके कंसेशनायर द्वारा इस सड़क का संधारण कार्य एक लंबे अरसे से नहीं किया जा रहा है जिससे प्रतिदिन सैकड़ों वाहन चालकों को आवागमन मे हमेशा बाधा उत्पन्न होती है साथ ही दुर्घटना का अंदेशा भी बना रहता है। जिससे वाहन चालकों में गहरा आक्रोश व्याप्त है क्योंकि जिस मार्ग से गुजरने पर प्रत्येक कि.मी. का टोल टैक्स वसूला जा रहा है उस सड़क पर कंसेशनायर द्वारा लम्बे समय से संधारण कार्य नहीं किया जा रहा है। श्री जैन ने बताया कि उनकी शिकायत पश्चात संभागीय प्रबंधक म.प्र.सड़क विकास निगम इंदौर-धार द्वारा मुख्यालय को प्रस्ताव प्रेषित कर लिखा गया था कि कंसेशनायर को अनुबंध की धाराओं के अनुसार मार्ग के आवश्यक रखरखाव और मरम्मत कार्य करने के निर्देश जारी किए गए थे किंतु अनेकों सूचना पत्र जारी करने के बाद भी कंसेशनायर द्वारा आवश्यक संधारण कार्य नहीं करवाया जा रहा है।

15 दिन बंगाल में ही रहूंगा ममता को घर में हराना है

शाह बोले-टीएमसी को खाड़ी में फेंक दो, लोगों ने काले झंडे दिखाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के भवानीपुर में रोड शो किया। उन्होंने कहा- मैं अगले 15 दिन बंगाल में रहने वाला हूं। टीएमसी को जड़ से उखाड़ फेंकने और उसे बंगाल की खाड़ी में फेंकने के लिए हर किसी को बिना किसी डर के वोट देना चाहिए। कोई भी गुंडा बंगाल के मतदाताओं को नहीं रोक सकता। शाह का काफिला जब कालीघाट पहुंचा, जहां से ममता का घर कुछ ही दूर है वहां पर टीएमसी कार्यकर्ता ने काफिले के सामने जय बांग्ला और ममता बनर्जी जिंदाबाद के नारे लगाए। सिर पर काला कपड़ा बांधे लोगों ने अमित शाह गो बैक के नारे लगाए और काले झंडे भी दिखाए। इसके बाद टीएमसी और बीजेपी कार्यकर्ताओं में झड़प होने लगी। हालात काबू करने के लिए पुलिस ने बैरिकेडिंग की और भीड़ पर कंट्रोल किया। इससे पहले शाह ने कोलकाता में रैली में कहा-ममता को उनके घर में भी हराना होगा।

पिछली बार नंदीग्राम हारीं अब पूरा बंगाल हारेंगी

अमित शाह ने आगे कहा कि पिछली बार ममता बनर्जी नंदीग्राम में हार गई थीं और इस बार भवानीपुर के साथ-साथ पूरे पश्चिम बंगाल में भी उन्हें हार का सामना करना पड़ेगा। गृह मंत्री ने आगे कहा कि पूरा बंगाल ममता बनर्जी की विदाई करने के लिए तैयार है। सुवेंदु दा नंदीग्राम से लड़ना चाहते हैं। मैंने सुवेंदु दा से कहा था कि केवल नंदीग्राम ही नहीं बल्कि ममता बनर्जी के घर में जाकर उन्हें हराना है। ममता बनर्जी बंगाल में सरकार तो बना पाई थीं लेकिन ममता बनर्जी नंदीग्राम में सुवेंदु दा के सामने चुनाव हार गई थी। इस बार ममता बनर्जी पूरे बंगाल में भी हारेंगी और भवानीपुर में भी हारेंगी उन्होंने जोर देकर कहा कि शुभेंदु अधिकारी का नामांकन बंगाल में टीएमसी के पतन की शुरुआत साबित होगा।

होर्मुज संकट पर ईरान ने कर दिया बड़ा ऐलान

हमारे भारतीय दोस्त हैं सुरक्षित, उन्हें नहीं रोकेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में तनाव के बीच ईरान ने भारत को बड़ी राहत देते हुए होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले भारतीय जहाजों को सुरक्षित रास्ता देने का आश्वासन दिया है।

ईरान ने भारत को मित्र देश बताते हुए कहा है कि भारतीय ध्वज वाले जहाज और उसमें सवार नाविक सुरक्षित हैं, जिससे एलपीजी और तेल की आपूर्ति बनी रहेगी। ईरान ने कहा है कि भारतीय मित्रों को होर्मुज स्ट्रेट की स्थिति को लेकर कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। 28 फरवरी को इजरायल और अमेरिका के हमलों के बाद से यह महत्वपूर्ण जलमार्ग बाधित हो गया है। ईरान के भारत स्थित दूतावास ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि हमारे भारतीय मित्र सुरक्षित हाथों में हैं, कोई चिंता नहीं। ईरान होर्मुज स्ट्रेट को नियंत्रित करता है, जिसके रास्ते दुनिया की लगभग 20 फीसदी ऊर्जा आपूर्ति होती है। संघर्ष शुरू होने के बाद ईरान ने बहुत कम जहाजों को पार करने की अनुमति दी है। ईरान ने कहा है कि वह मित्र राष्ट्रों जैसे भारत, चीन, रूस, इराक और पाकिस्तान के जहाजों को गुजरने की अनुमति दे रहा है। अब तक कम से कम आठ भारतीय जहाज होर्मुज से निकल चुके हैं। इनमें दो एलपीजी कैरियर बीडब्ल्यू टायर और बीडब्ल्यू एल्म शामिल हैं, जिनमें कुल लगभग 94,000 टन एलपीजी का कार्गो था। वर्तमान में भारत के लिए 19 जहाज एलपीजी, कच्चे तेल और एलएनजी लेकर होर्मुज में फंसे हुए हैं।

स्वदेशी तेजस एक बार फिर से नापेंगे आकाश

आईएएफ के लिए 32 फाइटर जेट तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ.डीके सुनील ने गुरुवार को कहा कि हल्के लड़ाकू विमान तेजस भारतीय वायु सेना के लिए फिर से उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। उन्होंने उम्मीद जताई है कि एक हफ्ते के अंदर तेजस को फिर से संचालन के लिए जरूरी मंजूरी मिल जाएगी। एचएएल चेयरमैन के मुताबिक एक लोकल मॉडिफिकेशन कमेटी इस प्रक्रिया को देख रही है। इससे पहले उन्होंने मीडिया को इसकी जानकारी देते हुए कहा था, तेजस बेड़े को लेकर अच्छी खबरे ये है कि एलएमसी हो गया है।

हम बुधवार तक इसकी क्लीयरेंस की उम्मीद कर रहे हैं और यह बेड़ा उड़ान भरने लगेगा। भारतीय वायु सेना के बेड़े में 32 तेजस मार्क 1 लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट हैं।

फरवरी में रनवे की एक घटना के बाद उड़ान बंद

इस साल फरवरी में एलसीए तेजस विमानों का संचालन रनवे की एक घटना के बाद बंद कर दिया गया था। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने घटना को मामूली तकनीकी घटना बताया था। लेकिन फिर भी सुरक्षा कारणों से इंडियन एयर फोर्स ने इनका इस्तेमाल बंद कर दिया था। यह 4.5 पीढ़ी का ऑल वेदर, मल्टी रोल फाइटर एयरक्राफ्ट है। इसे आक्रामक एयरस्ट्राइक सपोर्ट, क्लोज कॉम्बैट और आसान ग्राउंड अटैक के लिए डिजाइन किया गया है।

एएपी ने राघव चड्ढा को राज्यसभा उपनेता पद से हटाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को सांसद राघव चड्ढा को राज्यसभा के उपनेता पद से हटा दिया है। उनकी जगह यह पोस्ट राज्यसभा सांसद अशोक मित्तल दे दी है। पार्टी ने राज्यसभा सचिवालय को पत्र लिखकर यह जानकारी दी। लेटर में कहा कि सदन में पार्टी की

तरफ से बोलने का समय न दिया जाए। राघव 2022 से पंजाब से राज्यसभा सांसद हैं। उनका कार्यकाल 2028 तक है। पार्टी ने इस फैसले की वजह नहीं बताई है। हालांकि, उन्होंने लंबे समय से पार्टी से दूरी बना ली थी और एएपी को लेकर कोई बयान नहीं दे रहे हैं। 27 फरवरी को जब एक निचली अदालत से अरविंद केजरीवाल को दिल्ली शराब नीति मामले में राहत मिली, तब भी उन्होंने कोई बयान नहीं दिया था।

ईरान युद्ध की आड़ में हरकत की तो नहीं बचेगा पाकिस्तान

- राजनाथ सिंह की चेतावनी, ऑपरेशन सिंदूर से भी भयानक होगा अंजाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को तिरुवनंतपुरम में आयोजित सैनिक सम्मान सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आज का भारत आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' रखता है। वह इसके खिलाफ सरहद के इस पार और उस पार दोनों तरफ कार्रवाई करता है। उन्होंने कहा कि चाहे 'उरी अटैक' के बाद हुई सर्जिकल स्ट्राइक हो, 'पुलवामा' के बाद की गई एयर स्ट्राइक हो या फिर अभी 'पहलगाम' की घटना के बाद किया गया ' ऑपरेशन सिंदूर' हो, हमने आतंकवाद के खिलाफ जबरदस्त प्रहार किया है। राजनाथ सिंह ने कहा कि पहलगाम में हुई आतंकी घटना के बाद भारतीय सैनिकों ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया था।

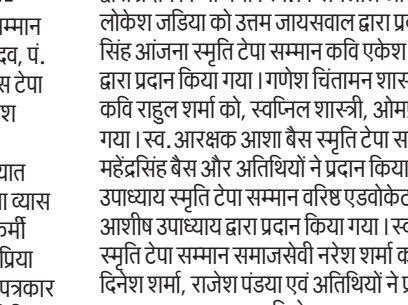

- **2047 तक भारत की नेवी को होगी सबसे बड़ी और सबसे ताकतवर-** राजनाथ सिंह ने कहा कि आज जिस तरह से समुद्री डोमेन की महत्ता बढ़ रही है, उसे ध्यान में रखते हुए हम अपने प्राचीन विजडम और आधुनिक टेक्नोलॉजी, दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं क्योंकि हम 2047 तक भारत की नेवी को दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे ताकतवर नेवी बनाना चाहते हैं।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के बलिदान को किया याद

उन्होंने मेजर संदीप उन्नीकृष्णन का स्मरण करते हुए कहा, कौन भूल सकता है, मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, अशोक चक्र पुरस्कार विजेता के सर्वोच्च बलिदान को। 'मुंबई टेरर अटैक' के दौरान उन्होंने आतंकवादियों से लड़ते हुए अपनी जान दे दी। यह देश का दुर्भाग्य था कि उस समय की कांग्रेस सरकार ने मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के बलिदान का उचित सम्मान नहीं किया। राजनाथ सिंह ने कहा कि आज हम देश के अलग-अलग हिस्सों में भी वॉर मेमोरियल बना रहे हैं ताकि देश की अगली पीढ़ी को प्रेरणा मिले कि हमारे सैनिकों ने देश की रक्षा के लिए क्या काम किया है।

ट्रम्प को अशांति का ग्लोबल टेपा सम्मान प्रदान करने की घोषणा

(डॉ. हरीशकुमार सिंह)

अंतरराष्ट्रीय मूर्ख दिवस पर एक अप्रैल को कालिदास अकादमी में 53 वें अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को अशांति का ग्लोबल टेपा सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई। टेपा सम्मलेन में वार्षिक टेपा रपट पढ़ते हुए सुमेध सिंह शर्मा ने कहा कि जब ट्रम्प को शांति का नोबल पुरस्कार नहीं मिला तो जिसे मिला उससे एक तरह से छीन ही लिया और अब टेरिफ की दादागिरी के बाद ,दूसरे देशों पर हमले कर अमन शांति की धज्जियाँ उड़ा दी हैं और अशांति फैला कर पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को खतरे में डालकर परेशान कर दिया है इसलिए अशांति के ग्लोबल सम्मान के वे हकदार हैं।

टेपा के संस्थापक-अध्यक्ष डॉ. शिव शर्मा एवं प्रख्यात समाजसेवी स्व. लाला अमरनाथ की स्मृति को समर्पित धुरंधर टेपा सम्मेलन में टेपा अतिथियों को विचित्र वेषभूषा और टेपा मुकुट पहनाई गयी थी। टेपा सम्मेलन का शुभारम्भ अकादमी के मुक्ताकाशी मंच के विशाल प्रांगण में सर्वोत्तम नृत्य अकादमी के डॉ. हरिहरेश्वर पोद्दार द्वारा लिखे और निर्देशित टेपा गीत की आकर्षक प्रस्तुति से हुआ। गायन ख्यात कलाकार सुदर्शन अयाचित और पूर्णिमा नाटानी एवं साथियों ने किया। टेपा सम्मेलन में प्रेस क्लब के अध्यक्ष नंदलाल यादव पर प्रशस्ति वाचन करते हुए उन्हें धुरंधर प्रेस क्लब अध्यक्ष की उपाधि प्रदान की गई। विधायक महेश परमार पर प्रशस्ति वाचन कर उन्हें धुरंधर विधायक की उपाधि प्रदान की गई। जिला भाजपा अध्यक्ष राजेश धाकड़, बैरवा समाज के अध्यक्ष सुरेन्द्र मरमट, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ एडवोकेट आदिश सी अगरवाला पर प्रशस्ति वाचन कर उन्हें टेपा उपाधि प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक प्रदीप शर्मा, वन विकास निगम के मुख्य वन सरंक्षक प्रफुल्ल फुलजेले, प्रेमचंद सृजन पीठ के निदेशक मुकेश जोशी, राजनेता मुकेश भाटी, फिटनेस कोच गिनील नवलकर मंच पर टेपा अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रशस्ति वाचन डॉ. हरीशकुमार सिंह, अशोक भाटी, सुरेन्द्र सर्किट ने किया।

प्रख्यात कॉमेडियन और हास्य अभिनेता राकेश बेदी से जब यह पूछा गया कि आप श्रोता दर्शकों को क्या कहना चाहेंगे तो उन्होंने कहा कि जब कोई तुमसे यह कहे कि बच्चा है तू मेरा तो उस आदमी से बच के रहना । प्रशस्ति वाचन करते हुए दिनेश दिग्गज के रोचक सवालों के अनोखे अंदाज में राकेश बेदी ने जवाब देकर आनंदित किया।

टेपा सम्मलेन में 53वां राधा लाला अमरनाथ स्मृति हास्य व्यंग्य टेपा सम्मान हास्य अभनेता राकेश बेदी को टेपा अतिथि महेश परमार, नंदलाल यादव, पं. योगेश शर्मा, शिवा खत्री, राजेश धाकड़ ने प्रदान किया। सांदीपनी न्यास टेपा सम्मान व्यंग्य कवि शंभू शिखर को प. योगेश शर्मा, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने प्रदान किया। पं. सूर्यनारायण व्यास स्मृति टेपा सम्मान प्रख्यात कवि सुभाष काबरा को अंकित व्यास, दिव्या व्यास एवं अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया। रंगकर्मी भगवती शर्मा स्मृति टेपा सम्मान कवयित्री प्रिया खुशबू को प. योगेश शर्मा ने प्रदान किया। पत्रकार मानसिंह बैस स्मृति टेपा सम्मान संपादक नितिन चावड़ा को संपादक महेंद्रसिंह बैस द्वारा और एडवोकेट ज्ञानस्वरूप श्रीवास्तव स्मृति टेपा सम्मान पत्रकार भूपेंद्र भूतड़ा को प्रलभ श्रीवास्तव द्वारा प्रदान किया गया। स्व. कन्हैयालाल भूतड़ा स्मृति टेपा सम्मान वरिष्ठ पत्रकार राजेश पांचाल को निकुंज भूतड़ा द्वारा प्रदान किया गया। कला संकेत सम्मान डॉ. अभिषेक सिंह तोमर को दीपक शर्मा, दिनेश शर्मा द्वारा प्रदान किया गया। स्व. सत्यनारायण गोयल स्मृति टेपा सम्मान पत्रकार राहुल यादव को पत्रकार डॉ. सचिन गोयल द्वारा प्रदान किया गया। स्व. किशनलाल जायसवाल स्मृति टेपा सम्मान कवि लोकेश जडिया को उत्तम जायसवाल द्वारा प्रदान किया गया। स्व. रणछोड़ सिंह आंजना स्मृति टेपा सम्मान कवि एकेश पार्थ को भगवान् सिंह आंजना द्वारा प्रदान किया गया। गणेश चिंतामन शास्त्री पंडा नाहरवाला स्मृति सम्मान कवि राहुल शर्मा को, स्वप्निल शास्त्री, ओमप्रकाश शास्त्री द्वारा प्रदान किया गया। स्व. आरक्षक आशा बैस स्मृति टेपा सम्मान अवनी कोठारी को पत्रकार महेंद्रसिंह बैस और अतिथियों ने प्रदान किया। क़ानूनविद स्व. बालकृष्ण उपाध्याय स्मृति टेपा सम्मान वरिष्ठ एडवोकेट आदिश सी अगरवाला को आशीष उपाध्याय द्वारा प्रदान किया गया। स्व. शकुंतला मोहनलाल शर्मा स्मृति टेपा सम्मान समाजसेवी नरेश शर्मा को राकेश बेदी, दीपक शर्मा, दिनेश शर्मा, राजेश पंडया एवं अतिथियों ने प्रदान किया। स्व. अशोक ब्रजलाल जायसवाल स्मृति टेपा सम्मान वृक्ष मित्र समिति के अध्यक्ष अजय भातखंडे को पत्रकार हर्ष जायसवाल और अतिथियों ने प्रदान किया।

कवियों के काँव-काँव सम्मलेन में हास्य व्यंग्य के प्रख्यात कवि शंभू शिखर, एकेश पार्थ, सुभाष काबरा, राहुल शर्मा, लोकेश जडिया और प्रिया खुशबू ने अपनी रचनाओं से समां बाँधा। संचालन प्रख्यात हास्य कवि दिनेश दिग्गज ने किया। सूत्र संयोजन अशोक भाटी, सुरेन्द्र सर्किट, कुलदीप रंगीला ने किया। टेपा सम्मलेन के सचिव मनीष शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

सरकार ने 40 केमिकल-पॉलिमर पर आयात शुल्क शून्य किया

पेट्रोकेमिकल, प्लास्टिक, उर्वरक और रेजिन उद्योग को बड़ी राहत

भोपाल/इंदौर (नप्र)। वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) ने 1 अप्रैल 2026 को गजट ऑफ इंडिया में दो असाधारण अधिसूचनाएं जारी कर पेट्रोकेमिकल उद्योग को बड़ी राहत दी है। अधिसूचना के तहत 40 महत्वपूर्ण रसायनों, मोनोमर्स और पॉलिमर पर बेसिक कस्टम ड्यूटी को शून्य कर दिया गया है। वहीं एक अन्य अधिसूचना के तहत अमोनियम नाइट्रेट पर कृषि अवसंरचना और विकास उपकर भी शून्य कर दिया गया है। यह छूट आज यानी 2 अप्रैल से लागू होगी और 30 जून तक प्रभावी रहेगी। एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज मध्यप्रदेश के अध्यक्ष योगेश मेहता ने बताया कि केंद्र सरकार ने लोकहित में यह फैसला लिया है। इससे मध्य प्रदेश के काफी उद्योगों को फायदा होगा। यह उद्योग को एक प्रकार से संजीवनी मिलने जैसा है। सरकार के इस फैसले से कच्चे माल की आयात लागत कम होगी। घरेलू विनिर्माण इकाइयों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी और अंतिम उत्पादों के दाम नियंत्रण में रहेंगे। यह छूट मुख्य रूप से प्लास्टिक, पेंट, रेजिन, फार्मास्यूटिकल, उर्वरक, पॉलीमर और विशेष रसायन उद्योग को लाभ पहुंचाएगी।

उद्योग जगत पर क्या असर पड़ेगा?

- प्लास्टिक और पॉलिमर उद्योग को सीधा फायदा
- पेंट, कोटिंग्स और रेजिन निर्माताओं की उत्पादन लागत घटेगी
- उर्वरक और फार्मास्यूटिकल कंपनियों को कच्चे माल सस्ता मिलेगा
- टेक्सटाइल, पैकेजिंग और ऑटोमोबाइल सेक्टर को अप्रत्यक्ष लाभ
- छोटे-मध्यम उद्योगों के लिए विशेष राहत, क्योंकि ये ज्यादातर आयातित कच्चे माल पर निर्भर हैं।

बिना परमिशन बजता रहा डीजे, पुलिस देखती रही तमाशा

न्यू मार्केट में 2 घंटे तक जनता बेहाल खिड़की-दरवाजे तक कांपे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के सबसे व्यस्ततम व्यावसायिक केंद्र न्यू मार्केट और रोशनपुरा क्षेत्र में बुधवार दोपहर जो नजारा दिखा, उसने पुलिस प्रशासन के इकबाल पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। एक विरोध प्रदर्शन के नाम पर डीजे वाहनों का ऐसा तांडव हुआ कि करीब दो घंटे तक न्यू मार्केट से लेकर पॉलीटेक्निक चौराहे तक की रफ्तार थम गई। विडंबना देखिए, जिस डीजे और शोर पर कोर्ट से लेकर सरकार तक सख्त है, वह पुलिस की हाईटेक मोबाइल वैन के साये में पूरे शहर को कानफोडू शोर सुनाता रहा।

3 थानों के बीच जिम्मेदारी का खेल- रोशनपुरा से पॉलीटेक्निक की यह चंद मीटर की सड़क पुलिस के लिए क्षेत्राधिकार की ऐसी पहेली बन गई, जिसका फायदा उपद्रवियों ने बखूबी उठाया। प्रदर्शनकारी जब नियमों की धज्जियां उड़ा रहे थे, तब तीन थानों की पुलिस अपनी जिम्मेदारी एक-दूसरे पर टालती रही। अरेरा हिल्स थाना, जिसके अंदर बीआरटीएस कॉरिडोर से राजभवन की ओर वाले हिस्से का जिम्मा है। न्यू मार्केट (टीटी नगर) थाना, जिस पर सड़क के बायीं ओर के क्षेत्र का जिम्मा है और श्यामला हिल्स थाना, जिस पर बाणगंगा चौराहे को पार करते ही शुरू होने वाले क्षेत्र की जवाबदेही है। तीनों ही थाने मूकदर्शक बने रहे।

डायल 100 पर शिकायत भी बेअसर

हैरानी की बात यह है कि जब परेशान नागरिकों ने डायल 100 पर शिकायत की, तो वह भी गलत थानों को फॉरवर्ड होती रही। जब तक पुलिस तय करती कि इलाका किसका है, डीजे संचालक अपना काम कर चुके थे। रैली की निगरानी पुलिस की एडवांस लॉ एनफोर्समेंट मोबाइल वैन कर रही थी। यानी कंट्रोल रूम में बैठे अफसर सब कुछ लाइव देख रहे थे, फिर भी इन डीजे वाहनों को रोकने की जहमत किसी ने नहीं उठाई। शाम ढलते ही एक और डीजे वाहन को अनुमति दे दी गई, जिसकी धमक से आसपास के घरों के दरवाजे तक हिल गए। अंधेरा होने पर डीजे की फ्लैशिंग लाइट्स ने ट्रैफिक में और भी खलल डाला।

मध्यप्रदेश में आरटीई लॉटरी में 1.06 लाख बच्चों को स्कूल मिले

22 हजार प्राइवेट स्कूलों में बिना फीस के पढ़ सकेंगे बच्चे, 15 अप्रैल बाद दूसरा चरण

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत निजी स्कूलों में प्रवेश के लिए गुरुवार को ऑनलाइन लॉटरी के जरिए 1 लाख 6 हजार बच्चों को स्कूल आवंटित कर दिए गए। यह प्रक्रिया राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा ऑनलाइन आयोजित की गई, जिसका लाइव प्रसारण भी किया गया। प्रदेश के करीब 22 हजार निजी स्कूलों में 1 लाख 22 हजार 551 सीटों के लिए कुल 1 लाख 78 हजार 714 आवेदन प्राप्त हुए थे। सत्यापन के बाद पात्र बच्चों को लॉटरी के जरिए स्कूल आवंटित किए गए।

51 हजार बच्चों को मिली पहली पसंद- लॉटरी के जरिए आवंटन में करीब 51 हजार बच्चों को उनकी पहली पसंद के स्कूल मिले हैं। शेष बच्चों को उपलब्ध विकल्पों के आधार पर अन्य स्कूल आवंटित किए गए। राज्य शिक्षा केंद्र ने पूरी प्रक्रिया सिंगल क्लिक सिस्टम के माध्यम से पूरी की। आवंटन के बाद अभिभावक आरटीई पोर्टल पर जाकर स्कूल की जानकारी देख सकते हैं और आवंटन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं।

एसएमएस के जरिए भेजी गई जानकारी- अभिभावकों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस के माध्यम से भी स्कूल आवंटन की सूचना भेजी गई है, जिससे

उन्हें तुरंत जानकारी मिल सके।

3 से 15 अप्रैल तक प्रवेश प्रक्रिया- जिन बच्चों को स्कूल आवंटित हुआ है, उनके अभिभावकों को 3 अप्रैल से 15 अप्रैल के बीच संबंधित स्कूल में जाकर प्रवेश प्रक्रिया पूरी करनी होगी। इस दौरान आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करना अनिवार्य रहेगा। स्कूल स्तर पर एडमिशन के दौरान मोबाइल ऐप के जरिए छात्र की उपस्थिति दर्ज की जाएगी। फोटो और ओटीपी वेरिफिकेशन के माध्यम से प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

स्कूल ने मना किया तो होगी कार्रवाई- यदि कोई निजी स्कूल प्रवेश देने से इनकार करता है, तो अभिभावक जिला परियोजना समन्वयक या बीआरसी कार्यालय में शिकायत कर सकते हैं। ऐसे मामलों में तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।

दूसरे चरण में फिर मिलेगा मौका- जिन बच्चों को पहले चरण में सीट नहीं मिली, वे 15 अप्रैल के बाद दोबारा विकल्प भर सकेंगे। रिक्त सीटों पर दूसरे चरण में फिर से लॉटरी प्रक्रिया आयोजित की जाएगी।

स्वयंसिद्धा समूह द्वारा शक्ति सम्मान

समारोह तथा कृति लोकार्पण संपन्न

भोपाल। स्वयंसिद्धा शक्ति सम्मान समारोह दुष्यंत संग्रहालय भोपाल में संपन्न हुआ। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में एडवोकेट रामकृष्ण पांडेय की कृति कवि मन का पुष्प और डॉ अनीता तिवारी की कृति सोनजूही का लोकार्पण हुआ। दोनों पुस्तकों का समीक्षा वक्तव्य वरिष्ठ साहित्यकार श्रीराम माहेश्वरी ने प्रस्तुत किया।

साहित्यिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समूह स्वयंसिद्धा की संस्थापक डॉ. अनीता तिवारी ने बताया कि पहला सत्र सुबह 1 1 बजे तथा दूसरा सत्र दोपहर 2 बजे शुरू हुआ।

पहले सत्र में प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता पद्मश्री नारायण व्यास मुख्य अतिथि, केंद्रीय अंबेडकर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति डॉ प्रकाश बरतूनिया विशिष्ट अतिथि, हिंदी लेखिका संघ की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती अनीता सक्सेना विशिष्ट अतिथि, आईपीएस सुशोवन बनर्जी विशेष अतिथि, वरिष्ठ रंगकर्मी संजय मेहता विशिष्ट अतिथि तथा वरिष्ठ पत्रकार संपादक शशांक दुबे विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

वरिष्ठ मूर्तिकार देवीलाल पाटीदार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। आरंभ में अनिता तिवारी ने स्वागत भाषण दिया। सरोज दवे ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

हनुमान जन्मोत्सव

छतरपुर में 171 क्विंटल अष्टधातु से बनी 51 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण

ग्वालियर और रतलाम में सोने-चांदी से चोला श्रृंगार

भोपाल (नप्र)। आज हनुमान जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। प्रदेशभर में शोभायात्राएं, भंडारे और धार्मिक आयोजन हो रहे हैं। भोपाल के खेड़ापति हनुमान मंदिर, इंदौर के पितरेश्वर और रणजीत हनुमान, उज्जैन के गेबी हनुमान, जबलपुर के अर्जी वाले हनुमान और ग्वालियर के मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में सुबह से आयोजन चल रहे हैं।

हनुमान जन्मोत्सव के मौके पर 2 अप्रैल 2026 को निकलने वाले जुलूस - ग्वालियर के रोकड़िया महाराज को चांदी की पोशाक पहनाई गई। इसकी कीमत करीब 1 लाख रुपए है। वहीं रतलाम के श्री बरबड़ हनुमान मंदिर और श्री मेहंदी कुई बालाजी मंदिर में सोने से श्रृंगार किया गया। इसके अलावा छतरपुर में 171 क्विंटल अष्टधातु से बनी 51 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया गया। इसे बनाने में 7 साल लगे हैं। पंडित अमर डिब्बेवाला के अनुसार, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा पर हनुमान जी का प्राकट्य उत्सव मनाया जाता है। इस बार पूर्णिमा गुरुवार को हस्त नक्षत्र और ध्रुव योग में आ रही है। कन्या राशि के चंद्रमा की साक्षी रहेगी। इस शुभ संयोग में साधु-उपासक हनुमान की कृपा के लिए अलग-अलग धार्मिक अनुक्रम करेंगे।

- **भोपाल: खेड़ापति हनुमान मंदिर- मनोकामना शिला पर लिखते हैं इच्छाएं-** करोंद स्थित 45 साल पुराने खेड़ापति हनुमान मंदिर की विशेषता यह है कि भूतल पर एक मनोकामना शिला (इच्छा-पुकारने का पत्थर) है, जहां भक्त अपनी इच्छाएं लिखते हैं। यहां आज भंडारा, अखंड रामायण पथ (निरंतर जप) और सुबह, शाम आरती होगी। यहां खेड़ापति लोक भी बनाया जाना है।
- **इंदौर: पितरेश्वर हनुमान मंदिर (पितृ पर्वत)- देश की सबसे ऊंची बैठी हुई हनुमान प्रतिमा-** इंदौर का प्रमुख आकर्षण है। बिजासन रोड पर पितृ पर्वत स्थित यह मंदिर दूर से दिखाई देता है। यहां अष्टधातु की बैठी हुई हनुमान प्रतिमा है, जो देश की सबसे ऊंची प्रतिमाओं में मानी जाती है (करीब 72-108 फीट, वजन 108 टन)। यह पितर दोष निवारण और पितरों की शांति के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर शांत वातावरण और पर्यटन स्थल के रूप में भी लोकप्रिय है। शाम को लाइट शो होता है।
- **इंदौर- रणजीत हनुमान मंदिर- प्रतिमा ढाल और तलवार लिए युद्ध मुद्रा में-** इंदौर के फूटी कोठी रोड गुमास्ता नगर में यह प्राचीन और चमत्कारी मंदिर विजय और संकट मोचन के लिए जाना जाता है। यहां हनुमान जी की प्रतिमा ढाल और तलवार के साथ युद्ध मुद्रा (रणजीत रूप) में है। अहिरावण उनके पैरों में है। यह दुनिया का इकलौता मंदिर माना जाता है जहां हनुमान जी इस रूप में विराजमान हैं। 1907 के आसपास स्थापित यह मंदिर परीक्षा, मुकदमा या चुनौती से पहले आशीर्वाद के लिए प्रसिद्ध है। मंगलवार और शनिवार को भारी भीड़ लगती है और प्रभात फेरी निकलती है। मंदिर में केसरिया महल बनाया जा रहा है, जहां बाबा रणजीत दर्शन देंगे। आज दिनभर भजन होंगे।
- **जबलपुर- अर्जी वाले हनुमान- अर्जी लेकर आते हैं भक्त-** जबलपुर के ग्वारीघाट स्थित 100 वर्ष पुराने अर्जी वाले हनुमान मंदिर में आसपास के जिलों से श्रद्धालु आते हैं। भक्त अपनी मन्नतें नारियल में बांधकर लटकाते हैं। यहां साल में एक बार मिलने वाले 'बाल रूप' के दर्शन के लिए लंबी कतारें लगती हैं।
- **ग्वालियर- मंशापूर्ण हनुमान- 26 साल से अखंड रामायण पाठ-** ग्वालियर रेलवे ओवरब्रिज के नीचे 300 साल पुराने मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में मान्यता है कि यहां मांगी हर मनोकामना पूरी होती है। यहां 26 साल से अखंड रामायण पाठ चल रहा है। आज दिनभर भक्तों की भीड़ रहेगी। हनुमान जन्म के बाद चोला चढ़ाकर पूजा-अर्चना और भजन-कीर्तन होंगे। 56 भोग लगाया जाएगा। सुबह मेले लगेंगे और भंडारे होंगे।
- **उज्जैन- गेबी हनुमान मंदिर- यहां हिंगलू और चमेली के तेल से होता है श्रृंगार-** उज्जैन के ढाबा रोड स्थित गेबी हनुमान की मूर्ति चमत्कारिक मानी जाती है। यहां हनुमानजी का श्रृंगार सिंदूर की जगह हिंगलू (लाल रंग) और चमेली के तेल से होता है। गुड़-चना चढ़ाने की मान्यता है। काला धागा हनुमान जी को स्पर्श कर दिया जाता है, जिससे बुरी बला से मुक्ति और अस्वस्थ लोगों को लाभ मिलता है। खासकर बच्चों को पहनाया जाता है।
- **भिंड- दंदरौआ सरकार- यहां डॉक्टर के रूप में पूजते हैं-** भिंड जिले का डॉक्टर हनुमान मंदिर, जिसे दंदरौआ सरकार धाम कहा जाता है। यहां हनुमानजी को डॉक्टर रूप में पूजा जाता है। मान्यता है कि यहां आने से गंभीर बीमारी में भी राहत मिलती है। दंदरौआ धाम में चोला श्रृंगार, भजन-पूजन और भंडारे होते हैं। 24 घंटे में 1 से 1.5 लाख श्रद्धालु दर्शन करते हैं।

सागर- परेड वाले हनुमानजी- सैनिक रूप में विराजमान हैं

सागर के छावनी इलाके में परेड मंदिर है। यहां मूंछों वाले हनुमान विराजमान हैं। माना जाता है कि यहां हनुमान सैनिक रूप में हैं। कहा जाता है कि एक सैनिक, जो हनुमान भक्त था, परेड छोड़कर मंदिर आ गया। तभी कर्नल ने हाजिरी लगाई और हनुमान ने सैनिक रूप में हाजिरी दी।

मुख्यमंत्री ने दीं श्री हनुमान प्राकट्योत्सव की मंगलकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को श्री हनुमान प्राकट्योत्सव की मंगलकामनाएं और बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कामना की है कि हनुमान जी की कृपा सब पर बनी रहे, उनके आशीर्वाद से सबको सद्बुद्धि-यश और कीर्ति प्राप्त हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रार्थना की है कि पवन पुत्र बजरंगबली सभी की मनोकामनाएं पूर्ण करें। सभी के जीवन में सुख-समृद्धि, संपन्नता का आलोक प्रकाशित हो।

यात्री बस ने बाइक सवार दो को टक्कर मारी

भोपाल में हादसे के बाद एक की मौत, एक जख्मी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बिलखिरिया इलाके में बुधवार रात तेज रफ्तार यात्री बस ने बाइक सवार दो लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में एक की मौत हो गई, जबकि एक की हालत नाजुक है। पुलिस ने इस मामले में बस चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी की अभी गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है। गुरुवार को पीएम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया है। परिजन बॉडी लेकर बेगमगंज रवाना हो गए हैं। वहीं शव का अंतिम संस्कार किया जाएगा। थाना प्रभारी उमेश चौहान के मुताबिक 30 वर्षीय सुरेंद्र लोधी पुत्र सुंदर लोधी ग्राम बेगमगंज रायेसन में रहता था। वह पोकलेन मशीन ऑपरेट करता था। बुधवार दोपहर पोकलेन का सामान लेने भोपाल आए थे। रात करीब आठ बजे वह भोपाल से रायसेन अपने साथी के साथ बाइक पर सवार होकर जा रहा था। तभी रास्ते में पीछे से आई यात्री बस क्रमांक एमपी 10 पी 0990 ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में महेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई और उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया।

घटना के समय बस में सवार थे यात्री

घटना के समय बस में यात्री सवार थे। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल को इलाज के लिए भर्ती कराया और शव को पीएम के लिए भेज दिया। साथ ही पुलिस ने यात्रियों को दूसरी बस से रवाना करने के साथ ही बस को जब्त कर लिया। अब पुलिस ड्राइवर की तलाश में जुटी है।

लगातार दूसरे दिन भी हमीदिया में पेन डाउन आंदोलन

मेडिकल टीचर्स का पेन डाउन आंदोलन तेज, सीधी भर्ती पर आपत्ति, डीपीसी से पदोन्नति की मांग

भोपाल (नप्र)। गांधी चिकित्सा महाविद्यालय (जीएमसी) भोपाल में 'सीधी भर्ती' के विरोध में चिकित्सा शिक्षकों का आंदोलन लगातार दूसरे दिन भी तेज होने जा रहा है। हमीदिया हॉस्पिटल के ब्लॉक-2 पोर्च पर दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक समस्त चिकित्सा शिक्षक एक घंटे का कार्य बंद आंदोलन करेंगे।

शिक्षकों ने साफ संकल्प लिया है कि यदि भर्ती की विज्ञप्ति तुरंत निरस्त नहीं की जाती, तो यह आंदोलन प्रतिदिन क्रमिक रूप से और अधिक बढ़ाया जाएगा। इससे पहले भी एक घंटे का 'पेन डाउन' आंदोलन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में डॉक्टरों ने भाग लिया। संघ का आरोप है कि पदोन्नति के पदों पर सीधी भर्ती लागू कर वर्षों की सेवा और वरिष्ठता के साथ अन्याय किया जा रहा है। मंगलवार को चिकित्सा शिक्षक संघ (एमटीए) के आह्वान पर दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक एक घंटे का 'पेन डाउन' आंदोलन किया गया। इस दौरान जीएमसी के एडमिन ब्लॉक में बड़ी संख्या में डॉक्टर और संकाय सदस्य एकत्रित हुए।

संपादकीय

अब एआई का 'हमला'

विश्व में खासकर भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के दुष्प्रभावों का आगाज हो गया है। अमेरिका की जानी मानी टेक कंपनी ओरेकल ने बुधवार को एक झटके में अपने 30 हजार कर्मचारियों को बाहर कर दिया। भारत में कंपनी के कर्मचारी जब सोकर उठे तो उन्हें मिले एक ई-मेल ने चिंता में डाल दिया। इसमें लिखा था कि आज उनका लास्ट वर्किंग-डे है। कुछ ही मिनटों में उनका सिस्टम एक्सेस बंद कर दिया गया। कंपनी ने अभी तक छंटनी की वजह नहीं बताई है। लेकिन कंपनी ने जिन 30 हजार कर्मचारियों को निकाला है, उनमें भारत के 12 हजार कर्मचारी हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कंपनी अगले महीने छंटनी का दूसरा दौर भी शुरू कर सकती है। गौरतलब है कि ओरेकल अमेरिकी टेक कंपनी है, जो दुनियाभर में कंपनियों को डेटा सर्विस देती है। ओरेकल ने अपने 30 हजार कर्मचारियों को भेजे ई-मेल में लिखा- कंपनी की वर्तमान जरूरतों को ध्यान में रखते हुए हमने संगठन में बड़े बदलाव के तहत आपका पद खत्म करने का फैसला किया है। इसलिए आज आपका आखिरी कार्य दिवस है। टर्मिनेशन से जुड़े दस्तावेज साइन करने के बाद आप सेवरेंस पैकेज (नौकरी खत्म होने पर मिलने वाला भुगतान) पाने के पात्र होंगे, जो कंपनी की शर्तों के अनुसार होगा। जल्द ही आपके कंप्यूटर, ईमेल, वॉइसमेल और फाइल्स का एक्सेस बंद कर दिया जाएगा और आप सिस्टम में लॉगिन नहीं कर पाएंगे। ध्यान रहे कि आप कंपनी की कोई भी गोपनीय जानकारी डाउनलोड, कॉपी या अपने पास नहीं रख सकते। कंपनी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि इतने कर्मचारियों को एक झटके में क्यों निकाला गया है। लेकिन कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि यह छंटनी परफॉर्मेंस के आधार पर नहीं की गई है। हालांकि कंपनी के एक कर्मचारी के हवाले से कहा गया है कि ओरेकल अब AI में भारी निवेश कर रही है, जिसके चलते यह कदम उठाया गया है। ओरेकल अंदरूनी तौर पर AI टूल्स का इस्तेमाल कर रही है। इसकी मदद से कम कर्मचारी ज्यादा काम कर पा रहे हैं। विशेषज्ञ इसे 'इनविजिबल लेऑफ' (अदृश्य छंटनी) बता रहे हैं, जिसमें कंपनियां बिना बड़ी घोषणा किए चुपचाप धीरे-धीरे कर्मचारियों की संख्या कम कर रही हैं। पिछले तीन महीनों में अमेजन, मेटा और डेल जैसी कंपनियों में मिलाकर 94 हजार से ज्यादा लोग नौकरी खो चुके हैं। चर्चा यह भी है कि कंपनी के कर्मचारी काम के 16 घंटे की शिफ्ट का विरोध कर रहे थे। कंपनी के फैसले से अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के ही कर्मचारी सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। उल्लेखनीय है कि ओरेकल एक बड़ी अमेरिकी टेक्नोलॉजी कंपनी है, जो डेटा मैनेजमेंट और क्लाउड सर्विसेस देती है। इसकी स्थापना 1977 में लैरी एलिसन और उनके साथियों ने की थी। 1970 के दशक में एलिसन ने सीआईए के लिए एक डेटाबेस बनाया, जिसका कोडनेम 'Oracle' था। ओरेकल का मतलब 'सटीक जानकारी देने वाला स्रोत' है। सीआईए को भारी डेटा स्टोर और मैनेज करने के लिए ऐसे ही सिस्टम की जरूरत थी। ओरेकल का मुख्य काम कंपनियों और संस्थानों का डेटा सुरक्षित तरीके से स्टोर करना और उसे मैनेज करना है। कंपनी क्लाउड सर्विस भी देती है, जिससे कंपनियां अपना डेटा सुरक्षित रख सकती हैं और एक्सेस कर सकती हैं। भारत में भी कई बैंक, इनकम टैक्स विभाग और बड़ी कंपनियां ओरेकल की तकनीक का इस्तेमाल करती हैं। इस घटनाक्रम से साफ है कि अब आईटी क्षेत्र के स्वर्णिम दिनों पर ग्रहण लग चुका है। इतनी बड़ी संख्या में निकाले गए लोग अब क्या करेंगे, यह बड़ा सवाल है। युद्ध की मार के बीच एआई का यह 'हमला' और भी डराने वाला है।

युद्ध के बीच गांव की ओर लौटते लोगों के दर्द

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक एनएचआरसी (इण्डिया) में स्पेशल मॉनिटर व केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

शहर से गांव की ओर भागती आबादी को देखकर यह आज समझ में आने लगा है। जब कोविड-19 महामारी आई थी, तो लोग गांव वापस हुए थे। असहाय से वापस हुए थे। निराश से वापस हुए थे। भागे थे किसी तरह गांव की ओर। उन्हें यह लगा कि महामारी से अगर बचना है तो गांव चलना चाहिए। अपने पैरों से मीलों चले लोग, अपने गांव में अकेले रहना चुन लिए, उन दिनों उन्हें उन्हीं गाँवों ने उम्मीद दी। सहारा दिया। भले गांव जाकर कोरोना से मर गए ऑक्सीजन के अभाव में लोग, लेकिन गांव गए लोग।

जब दुःख के दिन आते हैं, तो गांव याद आता है। लोग अब फिर से गांव की ओर लौटने लगे हैं। संघर्ष छाया है पश्चिम एशिया में और भारत में लोग गांव भागने लगे हैं। इस भगदड़ के पीछे बहुत बड़ा कारण है। ईरान-इजरायल-अमरीका के बीच छिड़े युद्ध ने शहरी जीवन चुनने वालों की नींदें हराम कर दी है। श्रम की तलाश में लोग गांव आते हैं और फिर धीरे से बस जाते हैं शहर में। लेकिन जब आफत आती है तो उन्हें वही शहर वैरी लगने लगते हैं।

शहर का सब्जबाग बहुत लुभावना होता है। अपनों से दूर करने वाला शहर, लेकिन बुरे वक्त पर संभाल नहीं पाता। अपनी ग्लैमर की रौशनी में अँधा किया शहर उनके भीतर के अंधकार को ऐसे जगा देता है कि लोग गांव की ओर लौटने लगते हैं और अपना ठौर और ठिकाना फिर से गांव में ढूंढने निकल पड़ते हैं। पहले गांव में लोग रहते थे। अब, जब उस गांव को लोग देखने के लिए जाते रहे हैं, तो विपरीत परिस्थितियों ने बता दिया कि गांव छोड़ो मत। गांव में ही तुम्हारी जड़ें हैं उसे पकड़कर रखो। वहां भी अपना एक ठिकाना बनाकर रखो।

युद्ध से शहर इतना अप्रिय फिर से लगने लगा। गांव में उम्मीद बन गई। शहर से गांव की ओर भागती आबादी को देखकर यह आज समझ में आने लगा है। जब कोविड-19 महामारी आई थी, तो लोग गांव वापस हुए थे। असहाय से वापस हुए थे। निराश से वापस हुए थे। भागे थे किसी तरह गांव की ओर। उन्हें यह लगा कि महामारी से अगर बचना है तो गांव चलना चाहिए। अपने पैरों से मीलों चले लोग, अपने गांव में अकेले रहना चुन लिए, उन दिनों उन्हें उन्हीं गाँवों ने उम्मीद दी। सहारा दिया। भले गांव जाकर कोरोना से मर गए ऑक्सीजन के अभाव में लोग, लेकिन गांव गए लोग।

एक समय के बाद कोरोना महामारी ख़त्म हो गयी। फिर से अपने जीवन के गुजर-बसर के लिए लोग गांव से शहर की ओर गए। कुछ कमाना-धमाना शुरू किए। कोई अपना बिज़नेस सम्हाला तो कोई अपनी नौकरी पर लौटा। रिक्शावाला फिर शहर वापस आकर रिक्शा चलाना शुरू कर दिया। रेड़ी लगाने वाले लगाने लगे अपनी छोटी-मोती दुकाने। शहर फिर हंसने लगा। लोग कुछ कमाने लगे। अपने बच्चों का फिर से छोटे-बड़े स्कूलों में एडमिशन करा दिए और फिर अपने बूढ़े गांव के लोगों को दिखाने लगे अंगूठे। लेकिन वक्त पलटता है तो फिर सब उलट देता है। ईरान-इस्रायल व अमेरिका के अंतर्संघर्ष जब शुरू हुए तो इन गांव के लोगों को यह पता

नहीं था कि धरती के उस सिरे पर होने वाले युद्ध का असर भारतीय शहरों में होगा। लेकिन धीरे-धीरे सब समझ आने लगा। शहर में चूल्हे पर रोटियां नहीं सिकतीं। अब तो गांव में भी एक बड़ा तबका गैस चूल्हे से अपनी रोटियां सेंकता है। लेकिन फिर भी गांव चूल्हे से चलता है और रोटियां अब भी तवे पर सिकती हैं चूल्हे पर। शहरों में गैस की किल्लत बढ़ी और बढ़ गई शहरी जीवन की मुसीबतें। सब अब रोटियां सकेंगे कहाँ और जीएँगे कैसे, यह बात शहरी जीवन के लिए एक विकराल समस्या बन गई। अपने बच्चों को खिलाएंगे कैसे अगर नहीं सिकेंगी गैस के चूल्हे पर रोटियाँ।

शहर में गैस की मार झेलती शहरी आबादी ज्यादा समय तक झेल नहीं सकती, यह तो तय है। युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा है। ब्लैक में गैस खूब बिकने लगी। लम्बी क़तर में लोग कभी मार करने लगे, कभी गस्त खाकर गिरने लगे। यह जिंदगी भी अजीब है। कभी चैन से जीने नहीं देती यह गांव से रोजगार व धन की लालसा लिए शहर आये लोगों को समझ जब आई तो फिर लोगों के लिए एक ही सहारा बचा गांव। वही गांव जिसे वे छोड़ आये थे। वही गांव के लोग जिसे वे छोड़ आये थे। यह पलायन और पेट पालने की कोशिश का भारतीय संघर्ष है जिसमें गांव कैसे हासिये से केंद्र में आ जाता है और कैसे फिर हासिये से पहुँच जाता है, इसकी गाथा एक ही दशक में देखने को बहुत बारीकी से मिला।

गांव लौटते लोगों के पास अब गांव लौटने पर कोई ठिकाना नहीं है लेकिन उन्हें यह यह भरोसा है कि गांव चलेंगे तो किसी न किसी तरह जिंदगी का गुजर-बसर कर ही लेंगे। यद्यपि गांव में भी अभी गैस नहीं मिल रही है। वहां भी कोई रोजगार के साधन नहीं हैं। मनारेगा में शहर से लौटा व्यक्ति गांव में रहकर अपनी शान में काम करने से बचता है। उसकी इज्जत चली जाएगी। जीरामजी ने तो अब काम के तरीके और काम के घंटे भी अपने हिसाब से तय कर दिए हैं। मुंबई में अमिताभ बच्चन और शाहरुख़ खान से लेकर राजपाल यादव की अपनी चमक में जीने वाले मुम्बैया भाई लोग और दिल्ली में कैपिटल फीलिंग लेने वाली आबादी जीरामजी में भला जाकर काम कैसे करेगी उनके भीतर का शहर उन्हें इन कामों में न लगने देता है और न ही शहरी फीलींग्स उन्हें अपने आपको गाँवों के अनुरूप ढलने देती हैं। ऐसे में, यह भ्रम में जीने वाली जिंदगियों के दर्द गांव में भी कम नहीं होने वाले हैं लेकिन गांव लौटते लोगों के दर्द एक तरफ उन्हें अपनी ज़िन्दगी किसी तरह काट लेने का विश्वास उन्हें गांव की ओर लौटने से रोक भी नहीं पा रहा है।

यदि ईरान-इजरायल-अमरीका का युद्ध लम्बा चला तो क्या होगा, यह कहना मुश्किल है क्योंकि बर्चस्व की लड़ाई लड़ते देशों को यह पता नहीं होता कि वे मानवता की हत्या कर रहे हैं। अच्छी तरह से जी रही आबादी की शांति भंग कर रहे हैं। करोड़ों लोगों के मानवाधिकार के साथ खेल रहे हैं। दुखद यह है कि वे खेल रहे हैं और खेलने की जिद में हैं। गांव को बचाकर रखना अब भारत के लिए ज़रूरी होगा। शहरी सुविधाओं से लैस होते गांव को अपनी लकड़ी, अपने ईंधन, अपनी अर्थव्यवस्था को जिंदा रखना होगा। गांव को जिंदा रखना होगा। वरना आफत के समय में न ठौर रहेगा और न ही ठिकाना।

कठिन समय में सब समझ आता है। जैसे ही मुसीबत से निकलते हैं फिर शहरी रौशनी और ग्लैमर भाने लगते हैं। राज्यों का दायित्व है कि गांव को बचाकर रखें। गांव के लोगों को गांव में ही अच्छी ज़िन्दगी के अवसर प्रदान करने के लिए खूब इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करें। पेड़-पौधे और पशुओं का भी बराबर विकास व संरक्षण हो, नहीं तो जब गांव बचेंगे ही नहीं तो आफत में शहरी ज़िन्दगी में कैद लोग गांव आयेंगे कैसे? ऐसे में, दुनिया के राज्यों का दायित्व है कि वे अपने गाँवों को सुरक्षित, गरिमामय और श्रेष्ठ आकार देने और उनकी अपनी खूबसूरती को कायम रखने के लिए निवेश करें। यह गांव के लिए किया गया निवेश विपरीत परिस्थितियों में सहारा बनेंगे। उम्मीद छोड़ चुके लोगों की ज़िन्दगी को खुशियाँ देंगे। गांव की ओर लौटते लोगों के दर्द यह सोचने के लिए बाध्य कर रहे हैं।

बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया और गांधी से डरता समाज

सामयिक

निलेश देसाई

लेखक गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

आज की दुनिया एक अजीब और डरावनी विडंबना से गुजर रही है। एक तरफ हमारे पास कृत्रिम मेधा (AI) और अंतरिक्ष फतह करने वाली तकनीक है, तो दूसरी तरफ हमारे विचार पाषाण युग की हिंसक प्रवृत्तियों की ओर लौट रहे हैं। रूस की सीमाओं से लेकर मध्य-पूर्व के मलबों तक, और दक्षिण चीन सागर की लहरों से लेकर हमारे अपने भीतर पनपती नफरत तक–पूरी मानवता आज बारूद के ढेर पर बैठी है। ऐसे समय में जब मिसाइलों की गर्जना और ड्रोनों की भिनभिनाहट को 'राष्ट्रीय गौरव' का संगीत मान लिया गया हो, महात्मा गांधी की याद आना कई लोगों को एक पुरानी पड़ चुकी रस्म लग सकता है। लेकिन हकीकत इससे कहीं अधिक गहरी और कड़वी है। गांधी आज अप्रासंगिक नहीं हुए हैं, बल्कि वे आज के समाज और सत्ता के लिए पहले से कहीं अधिक 'असुविधाजनक' और 'असहज' हो गए हैं। सच तो यह है कि आज का वैश्विक समाज गांधी से डरता है, क्योंकि गांधी केवल शांति की बात नहीं करते, वे उस 'नैतिक साहस' की मांग करते हैं जो आज की दुनिया में लगभग विलुप्त हो चुका है।

युद्ध का उत्सव और शांति का डर

आज युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़े जा रहे; वे हमारे ड्राइंग रूम और मोबाइल स्क्रीन तक पहुँच चुके हैं। टेलीविज़न स्क्रीन युद्ध को एक 'लाइव तमाशा' बना रही हैं और सोशल मीडिया हिंसा को एक सामान्य, यहाँ तक कि गौरवशाली घटना की तरह परोस रहा है। युद्ध की इस मानसिकता में सबसे पहली बलि 'संवाद' की चढ़ती है। गांधी का डर यहीं से शुरू होता है।

गांधी हमें एक ऐसी जगह ले जाकर खड़ा कर देते हैं जहाँ 'दुश्मन' की कोई सरल और इकहरी परिभाषा नहीं है। आज की राजनीति और सार्वजनिक विमर्श को 'स्पष्ट दुश्मन' चाहिए ताकि वे अपनी हिंसा को जायज ठहरा सकें। लेकिन गांधी याद दिलाते हैं कि अन्याय कहीं भी हो, आत्मचिंतन की जिम्मेदारी दोनों पक्षों की है। वे याद दिलाते हैं कि 'आंख के बदले आंख पूरी दुनिया को अंधा बना देगी।' आज की सत्ताएँ और युद्धोन्मादी समाज इस वाक्य से इसलिए डरते हैं क्योंकि यह उनके प्रतिशोध (Revenge) के तर्क को कमजोर कर देता है। हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जो 'बाइनरी' (या तो आप हमारे साथ हैं या दुश्मन के साथ) पर टिका है। सोशल मीडिया ने हमारी सुनने की क्षमता घटा दी है और चीखने की ताकत बढ़ा दी है। इस शोर के बीच गांधी की आवाज़ धीमी, संयमित और सबसे बढ़कर 'प्रश्नवाचक' है। आज जब युद्धों को 'न्यायपूर्ण' और 'अपरिहार्य' बताकर प्रचारित किया जाता है, तब गांधी का यह प्रश्न कि 'क्या आपका साधन आपके साध्य को ही नष्ट तो नहीं कर रहा?' सत्ता और समाज दोनों को असहज कर देता है। गांधी सत्ता के लिए असहज थे और आज भी हैं, क्योंकि वे केवल विरोध में नहीं, बल्कि समर्थन में भी नैतिक सवाल खड़े करते थे। वे अपने अनुयायियों से भी पूछते थे कि क्या उनका क्रोध उचित है? क्या उनकी शांति केवल कायरता का आवरण तो नहीं? आज की 'कैंसिल कल्चर' वाली दुनिया में, जहाँ असहमति का उत्तर केवल नफरत और बहिष्कार है, गांधी का संवाद का आग्रह एक 'बौद्धिक खतरे' की तरह देखा जाता है।

अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि आज के तानाशाह और विस्तारवादी ताकतें गांधी की भाषा नहीं समझतीं। यह दलील देकर हम गांधी को एक तरफ हटा देते हैं ताकि हम अपनी हिंसा को 'व्यावहारिकता' का नाम दे सकें। लेकिन क्या वास्तव में युद्ध व्यावहारिक हैं? इतिहास गवाह है कि अधिकांश युद्धों ने तात्कालिक विजय तो दी, लेकिन स्थायी शांति कभी नहीं। उन्होंने केवल अगले युद्ध के बीज बोए।

गांधी की अहिंसा कायरों का अस्त्र नहीं थी। वह दुनिया के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य के सामने निहत्थे खड़े होने का साहस थी। आज समाज इसलिए डरता है क्योंकि अहिंसा में जवाबदेही अपने ऊपर लेनी पड़ती है। हिंसा में दोष हथियारों, हालातों और इतिहास पर मढ़ा जा सकता है, लेकिन अहिंसा में दोष अपने भीतर खोजना पड़ता है। यह एक 'नैतिक ऑडिट' है, जिससे गुजरने की हिम्मत आज के 'पोस्ट-ट्रुथ' युग में कम ही दिखती है। हम गांधी को नोटों पर छाप सकते हैं, उनकी मूर्तियों पर माला चढ़ा सकते हैं, लेकिन उन्हें अपने जीवन में उतारने का मतलब होगा–अपनी सुख-सुविधाओं और अहंकार का त्याग करना। और यही वह बिंदु है जहाँ समाज गांधी से किनारा कर लेता है।

युवाओं में गांधी के प्रति बढ़ती दूरी को भी इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। आज का युवा त्वरित परिणाम और 'इंस्टेंट' जीत का आकांक्षी है। गांधी धैर्य, आत्मसंयम और दीर्घकालिक नैतिक संघर्ष की बात करते हैं। हमने गांधी को शिक्षा और राजनीति के माध्यम से एक 'नीरस पाठ' बना दिया है। हमने उन्हें केवल स्वच्छता और चरखे तक सीमित कर दिया, जबकि वे सत्ता की निरंकुशता और समाज की जड़ता के खिलाफ सबसे बड़े बागी थे।

आज जब दुनिया भर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संकट में है, तब गांधी की वह 'सत्याग्रही' छवि डराती है जो कहती थी कि 'अन्यायी कानून को न मानना हमारा कर्तव्य है।' व्यवस्था को गांधी के 'भजन' पसंद हैं, उनका 'सत्याग्रह' नहीं। समाज को गांधी की 'पूजा' पसंद है, उनका 'प्रश्न' नहीं।

आज की वैश्विक विभीषिका के दौर में गांधी कोई 'क्विक फिक्स' या तुरंत मिलने वाला समाधान नहीं हैं। वे एक दिशा हैं, एक नैतिक कंपास हैं। जब चारों ओर युद्ध का शोर हो, तब एक शांत आवाज़ ही हमें भटकाव से बचा सकती है। गांधी इसलिए प्रासंगिक नहीं हैं कि वे सब कुछ ठीक कर देंगे, बल्कि इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे हमें आईना दिखाते हैं।

वे याद दिलाते हैं कि हर युद्ध अंततः एक मानवीय विफलता है। वे याद दिलाते हैं कि जब तक हम दूसरे को 'मनुष्य' मानना बंद नहीं करेंगे, तब तक शांति केवल दो युद्धों के बीच का अंतराल बनी रहेगी।

सच तो यह है कि हम गांधी से इसलिए दूर नहीं हो रहे कि वे हमें कुछ देना बंद कर चुके हैं, बल्कि इसलिए कि वे हमसे बहुत कुछ मांगते हैं–कठोर ईमानदारी, गहरी करुणा और खुद की गलतियों को स्वीकार करने का साहस। ये तीनों गुण आज की दुनिया में सबसे बड़ी कमी बन गए हैं। अब समय आ गया है कि हम गांधी को याद करने की औपचारिकता छोड़कर उनसे संवाद शुरू करें। सवाल यह नहीं है कि 'क्या गांधी आज प्रासंगिक हैं?', सवाल यह है कि 'क्या हम आज इतने साहसी बचे हैं कि गांधी के उस असहज करने वाले सच को सुन सकें?'

होर्मुज की किरकिरी और ट्रंप का पसोपेश

इजरायल- अमेरिका बनाम ईरान

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ऐसा लगता है कि सब कुछ जेम्स हेडली चेज के उपन्यास के शीर्षक की तर्ज पर हुआ और डोनाल्ड ट्रंप और बेन्जामिन नेतन्याहू की जुगल-जोड़ी के साथ 'आ-बला, पकड़ गला' की उक्ति चरितार्थ हो गयी। एक माह बीत चुका है, लेकिन वर्षों से पाबंदियां झेल रहे ईरान के कस बल ढीले नहीं पड़ रहे हैं। उसने होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकेबंदी कर रखी है और इस्राइल के फौजी और नागरिक ठिकानों पर रोजाना दस बैलिस्टिक मिसाइलें दाग रहा है। एक अप्रैल को बेत शेमेश पर उसके प्रहार से नौजने ठौर मारे गये और तिफरेत का सीनेगाग नष्ट हो गया। इस बीच इस्राइल की परेशानी इस नाते बढ़ गई है कि 28 मार्च से हूती लड़ाके भी जंग में शामिल हो गये है। हूतियों के दक्षिण इस्राइल में हमलों का स्रोत यमन है, लेकिन उस पर इराक और लेबनान के रास्ते भी आक्रमण शुरू हो गये हैं। गौरतलब है कि इस्रायल का दक्षिण लेबनान पर कब्जा उसकी ग्रेटर इस्रायल मुहीम का हिस्सा है, किंतु संसाधनों की न्यूनता के चलते अनेक मोर्चों का खुलना उसके लिये घातक और और विनाशकारी है। इस्रायल पर इराक और लेबनान की ओर से हमले तथा 'थ्री एच'-हमस, हूतो और हिजबुल्लाह की साझा सक्रियता बीबी (नेतन्याहू) की पेशानी पर सलों के लिये पर्याप्त है। तेलअवीव, हैफा और येरुशलम पर लगातार द्रोन और मिसाइलें दाग कर ईरान ने आयरन डोम का मिथ ध्वस्त कर दिया है और संख्याबल के आधार पर वह इस्रायल को देर तक छकाने के मूड में है।

35 दिनों से जारी ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के फलस्वरूप सबसे बुरी गत ट्रंप कीबनी है। अब साफ हो गया है कि उन्होंने ईरान पर हमला 'बीबी' के उकसावे पर खब्त में आकर किया। मिशन की सबसे बड़ी विफलता यह रही कि पहले ही दिन अयातुल्लाह खामेनेई के हलाक होने के बावजूद ईरान में कोई 'कू-दे-ता' (तख्तापलट) नहीं हुआ। अयातुल्लाह के उत्तराधिकारी मोज्तबा मस्क्का में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं और उनकी ट्रंप को नसीहत ने सारे विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है। ट्रंप की दुनिया भर में भद्द पिटी है और 80 वर्षीय सनकी राष्ट्रपति के खिलाफ अमेरिकी शहरों में 80 लाख से अधिक लोगों ने प्रदर्शन किया। उनके खिलाफ कांग्रेस में अविश्वास प्रस्ताव लाने की बात भी चल रही है। उनकी भतीजी की मुखालफत के बाद अब सिनेटर लिंडसे ग्राहम जैसे उनके समर्थक जो कल तक फिल्लिया फड़काने और खरग पर कब्जे की दंभोक्ति कर रहे थे,अब युद्धपोतों से पाल उतारने की बात कर रहे हैं। अमेरिका अब तक जंग पर 36 बिलियन डॉलर फूंक चुका है। नतीजा ढाक के तीन पात। अनेक अमेरिकी मेरिनर ईरान के हत्थे लग गये हैं और 31 मार्च को अमेरिकी युद्ध संवाददाता सुश्री शैली पिट्टसन का बगदाद में अपहरण कर लिया गया। उसके बाद से शैली का कोई अता-पता नहीं है। अमेरिका-इस्राइल बनाम ईरान जंग को लेकर भविष्यवाणी नामुमकिन इसलिये है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि ट्रंप कब क्या कर बैठेंगे? ईरान की शिकस्त और रेजीम चेंज के मामले में हाथ मल रहे ट्रंप अब होर्मुज जलडमरूमध्य के मुद्दे को भी भुलाने को तैयार है और चाहते हैं कि इस मुद्दे को क्षेत्री व योरोपीय शक्तियां सुलझायें। उनके शब्दों पर गौर करें। वह कहते हैं: 'द वार इज गोइंग ग्रेट एंड कमिंग टू ऐन एण्डा' मुमकिन है कि परमाणु हमला भी उनके दिमाग में हो, लेकिन पैट्रियाटिक विजन के यूएनओ में प्रतिनिधि मोहम्मद सफा के इस्तीफे से इस साजिश का भांडा फूट गया है। जंग का सबसे बड़ा असर है कि अमेरिका पोषित नाटो ने अमेरिका को धता बता दी है। उसके अनन्य सहयोगी ब्रिटेन के कीर स्टार्मर ने सहयोग से साफ इंकार कर दिया दिया है और फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड, इटली स्पेन आदि भी उसी रास्ते पर हैं। जर्मनी में तो सारे अमेरिकी फौजियों और साजो सामान की वापसी की मांग उठ रही है। जंग से अमीर-उमराव दुबई और मध्यपूर्व में इंवेस्टमेंट से मुँह फेर लेंगे। ईरान की रणनीति कि उसने अमेरिका के सबसे बड़े एयरक्राफ्ट करियर अब्राहम लिंकन को दूर खदेड़ दिया है और सबसे ताजा खबर है कि तेल अवीव ने मध्यस्थता के लिये बीजिंग से संपर्क साधा है। यकीनन सामरिक और ऊर्जा के मान से दुनिया नये समीकरणों की देहरी पर है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉलर और रुपया: एक फुटपाथी भिड़ंत

व्यंग्य

पंकज प्रसून

लेखक व्यंग्यकार हैं।

स्थान: अंतरराष्ट्रीय बाजार की वह पतली गली, जहाँ देशों की किस्मत नीलाम होती है और आम आदमी की बचत का दम घुटता है।

पात्र: डॉलर (महंगे ब्रांडेड कोट में, हाथ में हंटर लिए) और रुपया (साधारण कुर्ते में, जिसकी जेबें अंदर की ओर मुड़ी हुई हैं)।

डॉलर: (अट्टहास करते हुए) क्यों भाई! क्या हाल हैं? सुना है आजकल तुम जमीन से कुछ ज्यादा ही गहरा रिश्ता जोड़ रहे हो? रोज नया रिकॉर्ड बना रहे हो नीचे गिरने का!

रुपया: (अपने कुर्ते की धूल झाड़ते हुए) इसे पतन मानना तुम्हारी भूल है डॉलर भाई। यह भार है। तुम ऊपर इसलिए उड़ रहे हो क्योंकि तुममें सिर्फ साम्राज्यवादी हवा भरी है। मैं नीचे इसलिए बैठ रहा हूँ क्योंकि मुझ पर करोड़ों पिताओं की फिक्र और खाली रसोई का बोझ है। वैसे भी, जो फर्श पर होता है, उसे कम से कम गिरने का डर नहीं सताता।

डॉलर: (सिगार का धुआं उड़ाते हुए) यह दार्शनिक बातें दरिद्रता का वह पाउडर हैं, जिसे तुम लोग चेहरे पर मल लेते हो। तुम्हारे यहाँ जब कोई मरता है, तो कहते हैं–ईश्वर ने बुला लिया। अब तुम गिर रहे हो, तो तुम्हारे हुक्मरान कहते हैं– रुपया कमजोर नहीं हुआ, डॉलर की सेहत कुछ ज्यादा ही गुलाबी हो गई है। वाह! यह वैसा ही तर्क है जैसे कोई मय्यत पर कहे– बंदा मरा थोड़े ही है, बस उसे हमेशा के लिए सोने का शौक चढ़ गया है।

रुपया: (ठंडी सांस लेकर) तुम ब्याज दर के गणितज्ञ हो, मैं प्याज की दर का मारा। तुम जब वाशिंगटन में हंटर घुमाते हो, तो सात समंदर पार मेरे यहाँ एक गृहणी के चूल्हे में सन्नाटा पसर जाता है। तुम्हारे एक प्रतिशत ऊपर चढ़ने का मतलब है–मेरे देश के एक बच्चे की दूध की बोतल का थोड़ा और खाली हो जाना।

डॉलर: (हंसते हुए) अरे भाई, बाजार में मेरा सिक्का चलता है। देखो, तुम्हारे विदेशी निवेशक कैसे झोला उठाकर मेरे पास भाग रहे हैं। वे पंछी हैं, जैसे ही तुम्हारे यहाँ दाना कम हुआ, वे फुर्र से उड़कर मेरी डाल पर बैठ गए। वे निवेशक कम, वो बरसाती मेंढक ज्यादा हैं जो तुम्हारी बदहाली सूंघते ही अपना बिस्तर गोल कर लेते हैं। उनकी बिकवाली ही तुम्हारी बर्बादी की पटकथा लिखती है।

रुपया: (मार्मिक स्वर में) वे शिकारी हैं। वे तब तक यहाँ रहते हैं जब तक उन्हें मेरे देश का लहू चूसने को मिलता है। और सोने पर सुहागा है तुम्हारा यह कच्चा तेल! खाड़ी के देशों में जब धुआं उठता है, तो तुम्हारी आँखों में चमक आ जाती है और मेरे पेट में मरोड़। तेल के बढ़ते दाम मेरी नसों में जहर की तरह दौड़ते हैं। तुम तेल की बूंद-बूंद से मेरा स्वाभिमान खरीदते हो।

डॉलर: (तिरस्कार भरे लहजे में) विश्व गुरु बनने का ढिंढोरा तो बहुत है, पर पाताल की ओर जाते गुरु को दुनिया भला क्या ऊंचाई सिखाएगी? बैसाखियां मेरी और बातें आसमान की!

रुपया: (आँखें मिलाकर) गुरु ऊंचाइयों का नहीं, अनुभवों का होता है डॉलर भाई। तुम कागजों के ढेर पर बैठे हो, मैं पसीने की गंध और संघर्ष की आंच में तपकर बना हूँ। कीमतें बढ़ाना तुम्हारी ताकत है, पर आधी रोटी में कल के सपने देखना मेरा स्वाभिमान।

डॉलर: (मुस्कुराते हुए) विज्ञापन तो बहुत छपते हैं तुम्हारे यहाँ। पर एक बात बताओ, जब तुम इतनी बुरी तरह लुढ़क रहे हो, तो तुम्हारी सरकार तुम्हें उठाती क्यों नहीं?

रुपया: (स्वाभिमानी मुस्कान के साथ) वे मुझे क्या उठाएंगे! असल में उन्हें डर लगता है कि कहीं मेरे उठाने के चक्कर में वे खुद ही न गिर जाएं। अपनी कुर्सी और साख बचाने की कोशिश में वे मेरे पतन के भी फायदे गिनने लगे हैं। विडंबना देखो, मुझे सहारा देने का दावा करने वाले खुद अपने कुतर्कों के बोझ से दबे जा रहे हैं।

डॉलर: (उकताकर) खैर, यह रोना-धोना बंद करो। मेरा समय कीमती है। मुझे अभी कई देशों की संप्रभुता नीलाम करनी है। तुम अपनी देखो, कहीं ऐसा न हो कि अगली बार मिलूँ तो तुम किसी म्यूजियम में स्मारक बनकर चिपके मिलो।

रुपया: (सीधा खड़ा होते हुए) इतिहास उनका होता है जो मिट जाते हैं। मैं तो बार-बार मरकर जी उठता हूँ। तुम ऊंचाई का आनंद लो, मैं गहराई में बैठकर देख रहा हूँ कि पतन की आखिरी सीमा क्या है। याद रखना, जिस दिन मेरे देश का आम आदमी तुम्हारी चमक के बजाय अपनी मेहनत की मिट्टी पर यकीन करने लगेगा, तुम्हारी ये सुपरपावर वाली हेकड़ी हवा हो जाएगी।

डॉलर अपने अहंकार की खनक छोड़ता हुआ अगली नीलामी की ओर बढ़ जाता है, और रुपया वहीं फुटपाथ पर अपनी फटी जेबें झाड़ते हुए खड़ा रह जाता है–बिल्कुल उस मध्यमवर्गीय पिता की तरह, जो बाजार से खाली हाथ लौटते हुए घर के दरवाजे पर अपनी मुस्कान रफू करने की कोशिश करता है।

दृष्टिकोण

अरुण कुमार डनायक

लेखक समाजसेवी हैं।

स्वायत्तता या अनिश्चितता: भारतीय कूटनीति का बदलता स्वरूप

डॉ. मनमोहन सिंह की विदेश नीति ने भारत को विश्वसनीय साझेदार के रूपमें स्थापित किया। उन्होंने न केवल अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता किया, बल्कि 'लुक ईस्ट' नीति को दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों तक विस्तार देकर और जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर विकासशील देशों के हितों की रक्षा कर दीर्घकालिक नैतिकता और व्यावहारिकता प्रदर्शित की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति में बहु-संरेखण और वैश्विक मंचों पर सक्रिय कूटनीतिक उपस्थिति प्रमुख विशेषताएँ बनकर उभरी हैं। भारत 'वैश्विक दक्षिण' की आवाज के रूप में लंबे समय से देखा जाता रहा है-इसकी नींव नेहरू युग के बांडुंग (इंडोनेशिया)सम्मेलन से पड़ी, जिसे मोदी सरकार ने विभिन्न रूपों में आगे बढ़ाया। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने रूसी तेल खरीदकर ऊर्जा सुरक्षासुनिश्चित की और साथ ही शांति प्रयासों का समर्थन करते हुए व्यावहारिक कूटनीति से आर्थिक लाभ भी अर्जित किया। लेकिन बार-बार बदलती कूटनीतिक प्राथमिकताएँ हमारी दीर्घकालिक रणनीति को लेकर अनिश्चितता की धारणा उत्पन्न करती हैं।

भारतीय विदेश नीति की विशिष्टता लंबे समय तक यह रही कि उसने राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, संप्रभुता, उपनिवेशवाद-विरोध औरशांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को समान महत्व दिया। नेहरू के नेतृत्व में भारतने महाशक्तियों की गुटबंदी से दूर रहकर शांति, संप्रभुता औरगुटनिरपेक्षता के माध्यम से अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी। नेहरू केवल आदर्शवादी नहीं थे; आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने व्यावहारिक कूटनीति का भी परिचय दिया। अमेरिका सहित पश्चिमी देशों से तकनीकी सहयोग सीमित होने पर भारत ने सोवियत संघ तथा बाद में यूरोपीय देशों के साथ औद्योगिक सहयोग स्थापित कर संतुलनकारी कूटनीति का परिचय दिया।

इंदिरा गांधी ने जटिल अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में कूटनीतिक दृढ़ता दिखाई। 1971 के युद्ध में अमेरिकी दबाव के बावजूद भारत अपनी रणनीति पर अडिग रहा। शिमला समझौता ने संघर्ष के बाद भी कूटनीतिक समाधान व क्षेत्रीय सहयोग की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाया। यद्यपि नेहरू की कश्मीर-चीन नीति और इंदिरा गांधी के शिमला समझौते को लेकर आलोचनाएँ होती रही हैं, किंतु तत्कालीन वैश्विक परिस्थितियों में दोनों ने भारत के आत्मसम्मान और संप्रभुता से समझौता नहीं किया।

भारतीय विदेश नीति में एक निर्णायक मोड़ पी व्ही नरसिम्हा राव के कार्यकाल में आया, जब शीत युद्ध समाप्त हुआ और वैश्विक व्यवस्था उदारीकरण की ओर बढ़ी। सोवियत संघ के पतन के बाद राव ने आर्थिक कूटनीति, 'लुक ईस्ट नीति' और पश्चिमी देशों के साथ संबंध सुधारकर विदेश नीति को नए सिरे से पुनर्संतुलित किया। उनके समय में भारत ने 1992 में इस्त्रायल केसाथ पूर्ण कूटनीतिक संबंध स्थापित किए और राजीव गांधी द्वारा शुरू की गई चीन के साथ संबंध सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए 1993 के सीमाशांति समझौता किया।

अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में भी यही परंपरा दिखाई देती है। वैचारिक भिन्नता के बावजूद उन्होंने विदेश नीति में नेहरूजी की परंपरा के अनुरूप समावेशी और संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। परमाणु परीक्षणों के बाद उन्होंने अमेरिका के साथ संबंधों को पुनर्संतुलित किया, साथ ही पाकिस्तान और चीन के साथ संवाद बनाए रखा।

डॉ. मनमोहन सिंह की विदेश नीति ने भारत को विश्वसनीय साझेदार के रूपमें स्थापित किया। उन्होंने न केवल अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता किया, बल्कि 'लुक ईस्ट' नीति को दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों तक विस्तार देकर और जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर विकासशील देशों के हितों की रक्षा कर दीर्घकालिक नैतिकता और व्यावहारिकता प्रदर्शित की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति में बहु-संरेखण और वैश्विक मंचों पर सक्रिय कूटनीतिक उपस्थिति प्रमुख विशेषताएँ बनकर उभरी हैं। भारत 'वैश्विक दक्षिण' की आवाज के रूप में लंबे समय से देखा जाता रहा है–इसकी नींव नेहरू युग के बांडुंग (इंडोनेशिया)सम्मेलन से पड़ी, जिसे मोदी सरकार ने विभिन्न रूपों में आगे बढ़ाया।रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने रूसी तेल खरीदकर ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की और साथ ही शांति प्रयासों का समर्थन करते हुए व्यावहारिक कूटनीति से आर्थिक लाभ भी अर्जित किया। लेकिन बार-बार बदलती कूटनीतिक प्राथमिकताएँ हमारी दीर्घकालिक रणनीति को लेकर अनिश्चितता की धारणा उत्पन्न करती हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की कूटनीति में प्रारम्भ में व्यक्तिगत समीकरण बनाने, परंतु प्रतिकूल परिस्थितियों में संवाद की निरंतरता बनाए रखने में संकोच की प्रवृत्ति दिखती है। शी जिनपिंग के साथ अनौपचारिक निकटता के बावजूद सीमा तनाव के बाद शीर्ष स्तर पर संवाद ठहर गया, और डोनाल्ड ट्रम्प के साथ व्यापारिक मतभेदों के दौरान प्रत्यक्ष संवाद से परहेज़ भी देखा गया। यह शैली अल्पकाल में तनाव टाल सकती है, किंतु दीर्घकाल में नीति की निरंतरता और विश्वसनीयता पर प्रश्न उठाती है।

पश्चिम एशिया में हाल के संकट ने इस चुनौती को और स्पष्ट किया है। ईरान-इज़राइल-अमेरिका तनाव के दौरान होर्मुज जलडमरूमध्य में आवाजाही बाधित होने से भारत के कई ऊर्जा-वाहक जहाज़ प्रभावित हुए। भारत के कूटनीतिक प्रयासों के चलते ईरान ने कुछ भारतीय जहाजों को अस्थायी सुरक्षित मार्ग दिया। ऊर्जा आयात सुनिश्चित करने के लिए भारत ने रूस समेत 41 देशों के साथ सहयोग मजबूत किया है, किंतु विश्लेषक मानते हैं कि दीर्घकालिक रणनीति और समयबद्ध प्रयास अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पाए हैं।

संकट के चलते अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ रहा है, विदेशी मुद्रा भंडार पर बोझ बढ़ा है, चालू खाता घाटा बढ़ने की आशंका है तथा खाड़ी क्षेत्र में रह रहे लगभग 90 लाख भारतीयों की सुरक्षा गंभीर चिंता बन गई है। हालांकि प्रधानमंत्री ने संसद को स्थिति से अवगत कराया, किंतु ट्रंप के पाँच दिवसीय युद्धविराम, पाकिस्तान-तुर्की-मिस्र की मध्यस्थता, संघर्ष की जड़ तथा ईरान के साथ हुई बातचीत के ठोस परिणाम जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपेक्षित स्पष्टता नहीं दिखी। चीन जैसी महाशक्ति के प्रत्यक्ष पड़ोसी होने से भारत पर बहुस्तरीय दबाव बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री के भाषण से यह आभास होता है कि भारत अब पूर्ण तटस्थता की बजाय इजराइल और अमेरिका के साथ अधिक निकट समन्वय की ओर बढ़ रहा है। ऐसे परिदृश्य में बहु-संरेखण पर आधारित नीति कुछ लचीलापन देती है, किंतु स्पष्ट और सुसंगत रुख की कमी इसकी निरंतरता पर प्रश्न खड़ा करती है।

सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में पश्चिम एशिया संकट पर राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट और संतुलित रुख अपनाने तथा स्थिति पर सतत निगरानी रखने पर सहमति बनी। हालांकि, संकट के समय यदि प्रधानमंत्री और प्रमुख विपक्षी नेता राहुल गांधी दोनों उपस्थित रहते, तो इससे भारत की कूटनीतिक एकजुटता का और अधिक सशक्त संदेश विश्व को जाता।

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में संसद में विदेश नीति पर गंभीर एवं निरंतर बहस की परंपरा को सुदृढ़ करना आवश्यक है। अतीत की तरह आज भी व्यापक संवाद जरूरी है, जिससे नीति-निर्माण अधिक संतुलित बने और दूरदर्शी नेतृत्व विकसित हो। इसके साथ ही सर्वदलीय बैठकें नियमित रूप से आयोजित हों तथा विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति की सिफारिशों को सरकारअधिक प्रभावी ढंग से अपनाए। कूटनीतिक मजबूरियों में सरकार जो नहीं कह पाती, उसे विपक्ष आसानी से कह सकता है। पूर्ववर्ती प्रधानमंत्रियों ने इसका अक्सर उपयोग किया। मोदी सरकार को भी इस संकट में विपक्ष की मदद लेनी चाहिए।

अपनी संतुलित कूटनीतिक विरासत के कारण भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। हमारी समृद्ध कूटनीतिक परंपरा ने यह सिद्ध किया है कि सिद्धांत और राष्ट्रीय हित एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। महात्मा गांधी ने कहा था – 'सिद्धांत विहीन राजनीति एक पाप है'। बहु-संरेखण की नीति ने भारत को कई अवसर प्रदान किए हैं, किंतु व्यक्तिगत समीकरणों पर आधारित कूटनीति में बार-बार दिखने वाली परिवर्तनीयता दीर्घकालिक निरंतरता और विश्वसनीयता पर सवाल उठाती है। इसलिए आज सबसे बड़ी चुनौती विदेश नीति को अधिक सिद्धांतनिष्ठ, सुसंगत और पूर्वानुमेय बनाना है–यही वह आधार है, जो किसी राष्ट्र को स्थायी सम्मान और वैश्विक प्रभाव प्रदान करता है।

शिक्षा

डॉ. संजीव कुमार

सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषज्ञ

एक पुस्तक एक राष्ट्र कानून की जरूरत

कक्षा एक के बच्चों का भी पुस्तकों का दाम सुनकर आपके होश उड़ जाएंगे। 40 -50 पेज की एक किताब के लिए आपको 300 से 400 रू. अदा करने पड़ते हैं। यूनिफॉर्म के हजारों रुपए अलग से यानी एक साधारण निजी विद्यालय में क्लास वन के बच्चों के दाखिले के लिए आपको कम से कम 10000 से 15000 रुपए खर्च करने पड़ेंगे। यूडीआईएसई के मुताबिक देश में कुल 14 लाख 71443 विद्यालय हैं, जिनमें 68. 9 प्रतिशत सरकारी हैं 79 प्रतिशत सहायता प्राप्त और 23.1 प्रतिशत निज़ी विद्यालय। सरकारी विद्यालयों में लगभग देश के 50-55 प्रतिशत बच्चे पढ़ते हैं और निजी विद्यालय में 40 प्रतिशत अन्य मदरसे, गुरुकुल तथा मान्यता प्राप्त विद्यालय में हैं। 90 दशक के पढ़ने वाले बच्चों के एक ही पुस्तक से दो-तीन वर्ष निकल जाते थे।

अप्रैल से स्कूलों में नए बच्चों का दाखिला शुरू हो जाएगा। देश के वें बच्चे जो निसहाय है, गरीब हैं, दलित -आदिवासी हैं वह सरकारी स्कूलों की तरफ रुख करेंगे और मध्यम वर्ग तथा धनाढय परिवार के बच्चे निजी विद्यालयों में पहुंचेंगे। जिनके जेब में जितना पैसा वो उतने बड़े स्कूल में पहुंचेगा। पिछले तीन दशकों से हम यही कर रहे हैं (उसके पूर्व विद्यालयों में किताबी भेदभाव उस प्रकार नहीं था जिस प्रकार आज है) देश की भावी पीढ़ी को हम बचपन से ही दो हिस्से में पाल रहे हैं। और फिर जब यह बड़े होकर सरकार से रोजगार तथा समानता का अधिकार मांगते हैं तो उनके लिए हम एक लाइन खींचना चाहते हैं। जबकि बचपन से ही दोनों के विवेक में अलग-अलग प्रकार की विचारधाराओं को बोने का हम कार्य करते आ रहे हैं। याद करिए 90 दशक की विद्यालयी शिक्षा उस दौर में मुश्किल से एक गांव में एक ही विद्यालय हुआ करता था, निजी स्कूल आज की भांति गली-गली में नहीं पनपे थे वे प्राय शहरों में अथवा गांव से काफी दूर होते थे जहां तक बमुश्किल से दो-चार बच्चे ही पहुंच पाते थे। बाकी सभी गांव के एक ही स्कूल में साथ-साथ पढ़ते थे। ग्राम प्रधान के बेटे से लेकर गांव के एक साधारण परिवार का बच्चा तक सब साथ में पढ़ते थे। आज आप किसी गांव के स्कूल में किसी ग्राम प्रधान के बेटे को तो छोड़िए आप उस स्कूल के चपरासी के बच्चों को भी उस स्कूल में नहीं देखेंगे। मैं यह नहीं कहता की तब स्थिति बहुत अच्छी थी पर जिस प्रकार से निजी स्कूलों का चलन देश में बढ़ने लगा उससे स्थिति और भी बद से बदत्तर होने लगी हां आप इस बात से संतुष्ट हो सकते हैं उस दौर की अपेक्षा इस दौर के बच्चों की अंग्रेजी थोड़ी अच्छी हो चली थी परंतु इसके लिए उन परिवारों ने बहुत बड़ा रकम भी खर्च किया है। मुझे ना ही निजी विद्यालयों से समस्या है ना ही अंग्रेजीयत से मुझे समस्या है इन सब के नाम पर समाज की लूट, शिक्षा का फर्जीवाड़ा और शिक्षा के बिगड़ते हालात से।

आज आप अपने बच्चों का जब किसी निजी विद्यालय में दाखिला करवाने जाते हैं तब आपको दाखिले से लेकर के बच्चे के यूनिफॉर्म तक के भारी भरकम पैसे चुकाने पड़ते हैं। और यह सब आपके विद्यालय अथवा विद्यालय के सुझाए गए दुकानों पर ही प्राप्त हो सकता है। कक्षा एक के बच्चों का भी पुस्तकों का दाम सुनकर आपके होश उड़ जाएंगे। 40 - 50 पेज की एक किताब के लिए आपको 300 से 400 रू. अदा करने पड़ते हैं। यूनिफॉर्म के हजारों रुपए अलग से यानी एक साधारण निजी विद्यालय में क्लास वन के बच्चों के दाखिले के लिए आपको कम से कम 10000 से 15000 रुपए खर्च करने पड़ेंगे।

यूडीआईएसई के मुताबिक देश में कुल 14 लाख 71443 विद्यालय हैं, जिनमें 68.9 प्रतिशत सरकारी हैं 79 प्रतिशत सहायता प्राप्त और 23.1 प्रतिशत निज़ी विद्यालय। सरकारी विद्यालयों में लगभग देश के 50-55 प्रतिशत बच्चे पढ़ते हैं और निजी विद्यालय में 40 प्रतिशत अन्य मदरसे, गुरुकुल तथा मान्यता प्राप्त विद्यालय में हैं। 90 दशक के पढ़ने वाले बच्चों के एक ही पुस्तक से दो-तीन वर्ष निकल जाते थे। उस एक पुस्तक को पहले बड़ा भाई पढ़ता था उसके बाद छोटा भाई और बच गया तो फिर कोई और, इस प्रकार एक ही पुस्तक कई वर्षों तक पढ़ने के लिए काम आता था। एक कक्षा की कहानियां सभी विद्यार्थियों को सालों याद रहती थी। पूर्वी क्षेत्र में दो बैलों की कथा, गिलहरी की कथा, परशुराम संवाद, ईस्ट इंडिया कंपनी का इतिहास, सिंधु सभ्यता का इतिहास इत्यादि सबको एक ही चैप्टर पढ़ाया जाता था जिसे पढ़कर पूरी पीढ़ियां विकसित होती थी। उस दौर में जब किसी परिवार का बच्चा अगली कक्षा में पहुंचता था तब अभिभावक रिश्तेदारों से पता करते थे कि उनका बच्चा किस कक्षा में है यदि उनके परिवार का कोई बच्चा अगली कक्षा में जा रहा है तो उस बच्चें की पुस्तक संभाल कर रखने के लिए कहा जाता था।

इससे समाज और शिक्षा दोनों का देश को लाभ मिलता था। सामाजिक रूप में परिवारजनों को हर वर्ष पुस्तक खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी और राष्ट्रीय स्तर पर सभी विद्यार्थियों में एक ही प्रकार का शिक्षा प्राप्त होता था। इससे आर्थिक दोहन और प्राकृतिक दोहन दोनों का फायदा होता था पर आज प्रकृति की भला किसे पड़ी है?

आजकल निजी विद्यालय तों छोड़िए सरकारी विद्यालयों में भी दो-चार वर्ष में पुस्तकों के पाठ्यक्रम बदलते रहते हैं जिससे कि बच्चों को हर वर्ष नए किताब लेने की आवश्यकता पड़ती है। आखिर पुस्तकों के पाठ्यक्रम में हर वर्ष प्रतिवर्तन करने के पीछे सरकार की क्या मंशा होती है , दशकों में बदला जाए तो बात समझ में आती है। इसलिए मेरा मानना है कि सरकार को इस ओर ध्यान देने की अति आवश्यकता है। उसे अपने पाठ्यक्रम दुरुस्त करने चाहिए जो कम से कम एक दशक तक तो आसानी से स्कूलों में पढ़ाया जा सके।

निजी विद्यालय हर वर्ष पुस्तकों के पाठ्यक्रम इस लिए बदलते हैं ताकि उनको हर वर्ष बड़ा मुनाफा प्राप्त हो सके। क्योंकि आज शिक्षा सेवा नहीं व्यवसाय बन चुका है, शुद्ध और सम्मानित व्यवसाय। इस व्यवसाय से आपको सामाजिक और आर्थिक दोनों प्रकार का लाभ प्राप्त होता है। आज निजी विद्यालय शिक्षा से कहीं ज्यादा होटल की तरह निर्मित किये जा रहे हैं। विद्यार्थियों के लिए संपन्न क्लासरूम अच्छी बात है परंतु इसके लिए एक परिवार को अपनी बड़ी संपत्ति दाव लगानी पड़े यह कहाँ तक ठीक हैं, और जब एक अभिभावक यह सब भी खर्च करने को तैयार है तो क्या उसके बच्चे को वह सब हासिल हो पाता है जो वह चाहता हैं? इसलिए विद्यालय को सिर्फ विद्यालय ही रहने दीजिए उसे होटल मत बनाइए।

अगर सरकार राष्ट्र को उन्नत देखना चाहती है। वह चाहती है कि भविष्य में देश के सभी नागरिक आपस में मिलजुल कर रहे हैं तो उन्हें शिक्षा की बुनियाद मजबूत और समान करने की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यकता है कि सरकार एक ऐसा कानून बनाए जिससे देश के सभी विद्यालय में चाहे वह निजी हो धार्मिक हो अथवा सरकारी सभी के पाठ्यक्रम एक हो। हां आप स्थानीय भाषा तथा संस्कृति के नाम पर अपने राज्य में एक अलग पुस्तक चला सकते हैं। परंतु गणित, विज्ञान अथवा इतिहास भूगोल के लिए अलग-अलग पुस्तकों को रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। इससे बच्चों को एक प्रकार का ही शिक्षा प्राप्त होगा तथा निजी विद्यालयों का गोरखधंधा भी रोका जा सकता है। जब सभी विद्यार्थियों में एक ही प्रकार की शिक्षा हासिल होगी, तब भविष्य में विचारधाराएं भी एक ही प्रकार की ही उन्नत होगी और सभी को किसी भी नौकरी के लिए अलग से शिक्षा हासिल करने की भी आवश्यकता नहीं होगी। तभी हम सबके लिए समानता की एक लाइन खींच पाएंगे।

विचार

चैतन्य नागर

लेखक स्तंभकार हैं।

सन्नाटे में सुनाई देती है धरती की सिम्फनी

सड़कों पर अभी सन्नाटा है; पक्षी भोर के पहले गीत गुनगुना रहे हैं। कुछ बहुत ही प्राचीन और अबूझ मन में सुगबुगा रहा है, ऐसा कुछ जिसकी ध्वनि भाषा से भी पुरानी है। समूची धरती कुछ कह रही है। न चीख कर, और न ही जल्दबाजी में। बस एक ऐसे धैर्य के साथ जो आधुनिक जीवन हमें सिखा ही नहीं पाता। हम शोर के युग में जीते हैं, जहाँ हर पल कुछ न कुछ सुनाई देता है। सन्नाटा हमसे छीन लिया गया है। एकांत किसी शातिर चोर की सेंधमारी में लुट गया है। फ़ोन पर लगातार नोटिफिकेशन की झुनझुनाहट, अनवरत स्क्रॉलिंग, पृष्ठभूमि का कोलाहल...ये कभी बंद नहीं होता। मन को कभी विश्राम नहीं मिलता; उसे बार-बार छेड़ा जाता है, खसोटा-नोचा जाता है, उकसाया जाता है। जैसे तांगे से बंधे किसी थके हुए अश्व को जबरदस्ती मार-मारकर दौड़ाया जा रहा हो। इस संस्कृति में उत्पादकता इतनी कीमती हो गई है कि स्थिरता को ही आलस्य समझ लिया गया है। चुपचाप बैठना तो समय की आपराधिक बर्बादी है। पर इस शोर के नीचे हमारा कोई आवश्यक और कीमती हिस्सा क्लांत होने लगता है–वह हिस्सा जो सपनों से बना है, जो बचपन की यादों में छिपा है और जो बस सिर्फ प्रकृति की गोद में ही साँस लेता है। हम भूल गए हैं कि थकान केवल शरीर की नहीं होती, मन की भी होती है। यह थकान शोर की बेचैन कोख से जन्म लेती है और शांति की गोद में ही मिटती है।

प्रकृति के साथ मौन संवाद का अर्थ जीवन से पलायन करना नहीं है; न ही यह कोई ऐयाशी है। मनोवैज्ञानिक थकान की, तंत्रिका-तंत्र की निरंतर सतर्कता की बात करते हैं, जो हमें हमेशा अलर्ट मोड पर रखती है, थका डालती है। पर इन तकनीकी शब्दों के आने से बहुत पहले मनुष्य सहज ही जानता था इसका इलाज। हम जंगलों, नदियों, पर्वतों की ओर जाते थे। उन पर काबू पाने के लिए नहीं, अपने मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि उनके साथ बैठने, एक हो जाने के लिए। वृक्षों, नदियों और पर्वतों की शांत उपस्थिति में मन की पकड़ ढीली पड़ने लगती है। विचार मुरझाने लगते हैं। साँसें गहरी होती हैं, अंतस में थोड़ी जगह बनती हुई महसूस होती है। दिन भर की चिंताएँ, अधूरी बातें, अनकहे

शब्द–जो कुछ भी बिखरा, छितराया हुआ था, वह खुद को समेटने लगता है। प्रकृति कोई अपेक्षा नहीं रखती है। नदी हमारी राय नहीं माँगती; वह बस बहती रहती है। पंछी हमें किसी तरह का दिखावा करने को नहीं कहता; वह गाता है अपनी ही स्वाभाविक खुशी में। फूल खिलता है बिना तारीफ की प्रतीक्षा किए। बाहरी दबाव न हों तो मन खुद ही चंगा होने लगता है, जैसे किसी घाव पर मरहम लगने से दर्द कम होने लगता है।

जो कुछ भी अतिरिक्त है वह इस मौन संवाद में घुल जाता है; बस आवश्यक बचा रह जाता है। अचानक खबर लगती है कि हमारा मानसिक शोर कितना अनावश्यक है, बेहोशी के क्षणों में बटोर लिया गया है,साझी विरासत में मिला गया है–दूसरों की अपेक्षाएँ, समाज की अंधाधुंध भाग-दौड़, खुद से गढ़ी हुई कहानियाँ–कितना बोझ है इनमें। प्रकृति के साथ मौन संवाद में कुछ ऐसा सुनाई पड़ता है जो सूक्ष्म और महीन है–एक झीनी सी आंतरिक स्पष्टता दिखती है जो अनावश्यक जिम्मेदारियों के नीचे कहीं दब गई थी। यह बस बचपन में हमारे पास थी जब हम बिना किसी कारण खिलखिलाते थे, शोर से सहम जाते थे, द्वेष से मुक्त थे। जब मन निर्मल था, नकारात्मकताओं से मुक्त था।

मौन में प्रकृति हमारा मनोरंजन नहीं करती; वह हमें उजागर करती है, हमारे भीतर छिपे सच को सामने लाती है। हवा में काँपता पत्ता हमारी अपनी क्षणभंगुरता का आईना बन जाता है–हम भी तो वैसे ही हैं जैसी ये पत्तियां! पर्वत की स्थिरता हमारे निरंतर संघर्ष की व्यर्थता दिखाती है। भागते-हांफते इंसान पर वे एक मूक बयान हैं। कुदरत के साथ ये शांत मुलाकातें भावुक नहीं, परिवर्तनकारी होती हैं। वे अपमान किये बगैर विनम्रता सिखाती हैं, स्वामित्व का भाव जताए बिना संबंधित होने का अर्थ समझाती हैं। बगैर डांट-डपट के शिष्टता सिखाती हैं।

इस मौन संवाद में थोड़ा बैठें तो एक गहरे संबंध का बोध होता है–वृक्ष केवल फर्नीचर बनाने वाला काठ नहीं रहता, नदी केवल उपयोगी पानी नहीं रह जाती, जंगल केवल संसाधन नहीं रहता। प्रकृति के साथ परिचय हमें सब की परवाह करना सिखाता है। यह गहरा जुड़ाव बौद्धिक जानकारी से नहीं, प्रकृति की शांत उपस्थिति से जन्म लेता है। हमारा पर्यावरणीय संकट केवल तकनीकी नहीं बल्कि संबंध की विफलताएँ हैं, यह याद रखना जरूरी है। हमने कुदरत का शोषण करना सीख लिया है, पर उसे सुनना भूल गए। हम जंगल काटते हैं बगैर प्रकृति की साँस को महसूस किए; नदियों में जहर डालते हैं बिना उनकी पीड़ा समझे। प्रकृति का मौन सानिध्य इन दूरियों को कम करता है। यह याद दिलाता है कि धरती मानवीय महत्वाकांक्षाओं की युद्धभूमि नहीं, बल्कि एक जीती-जागती, सुन्दर वास्तविकता है और हम उसका अभिन्न हिस्सा हैं–हमारी साँसें उसके साथ जुड़ी हैं, हमारा रक्त, मांस-मज्जा उससे ही बना है।

इस मूक संवाद के लिए कुछ सरल अभ्यास उपयोगी हो सकते है। हमें दुर्गम तीर्थयात्राओं की जरूरत नहीं। ध्यान वगैरह करने की भी जरुरत नहीं। मंदिर, मस्जिद और चर्च के चक्कर लगाने की दरकार नहीं। एक पार्क की बेंच, आकाश का नन्हा-सा टुकड़ा, सुबह का शांत बरामदा ही काफी है। हम थोड़ी देर के लिए छोटी बड़ी स्क्रीन छोड़ दें। बैठें। सेल्फी न खींचें, स्टोरी अपडेट न डालें। सुबह पक्षियों की आवाजें सुन लें। बोरियत को आने-जाने दें। धीरे-धीरे कुछ बदलने लगता है। जो पहले खाली लगता था, वह अब किसी ऐसी अनुभूति में परिवर्तित होने लगता है जिसका नाम तुरंत याद नहीं आता। मन में जगह बनती है, जैसे बादलों के हटने पर आकाश साफ हो जाता है। अभिव्यक्ति की आदिम हठी आदत को ऐसा मौन क्रांतिकारी प्रतीत होता है। उत्पादन के जुनूनी अर्थतंत्र में किसी वृक्ष के नीचे चुपचाप बैठना एक बगावत है। पर समय का यह ऐसा सदुपयोग है जिसे मापा नहीं जा सकता। और यही इसे जरूरी बनाता है। प्रकृति का साथ का हमें अपनी सही औकात दिखाता है–हम इतने छोटे हैं, ब्रह्मांड इतना बड़ा, यह याद दिलाता है। जीवन समस्याओं की श्रृंखला नहीं, एक रहस्य है। मौन अनुपस्थिति या पलायन नहीं, वह वास्तविक अर्थ में एक गहरी उपस्थिति है, एक सामीप्य है, जहाँ दुनिया कुछ न कहकर भी सबसे स्पष्ट बोलती है। आइये साथ चलें, थोडा बाहर निकलें। थोड़ी देर के लिए बस कुछ भी न कहें। गहराई से कुदरत को सुनें। यह धरती हमेशा से बोलती रही है और हम ही सुनने से इनकार करते रहे हैं। कुदरत को न सुनने से बहुत कुछ पहले ही ढह चुका है। अब और देर न हो जाए। अब हम थोड़ा चुप हो जाएँ, और धरती को खुल कर बोलने दें, उसे सुनने का प्रयास कर लें।

पूर्व नपाध्यक्ष ने किया ज्वारों का विसर्जन

भंडारे में उमड़ा जनसैलाब

सोहागपुर । पूर्व नपाध्यक्ष अध्यक्ष संतोष मालवीय एवं मालवीय परिवार ने नवरात्रि में ज्वारों की स्थापना की थी। कल शाम ज्वारों का विसर्जन बड़ी धूम-धाम से उत्साह के साथ किया गया। जिसमें भारी संख्या में नागरिकों, मातृशक्ति एवं युवाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस ज्वारों विसर्जन में शेर ,भालू आदि के मुखेटे लगाए। नागरिकों ने उपस्थित जनों को आनंदित किया। बैंड बाजों की उपस्थिति ने नागरिकों को उत्साहित किया। वहीं धार्मिक मातारानी के भजनों ने अलग ही आनंद दिया।इसके उपरांत रात में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इसे भंडारा न कहकर नगर भंडारा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि पूरा नगर भंडारे में उमड़ पड़ा। नागरिकों सहित मातृशक्ति ने भी विशाल उपस्थिति दर्ज कराई। वहीं पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, महेश मालवीय मुकेश मालवीय, सुनील मालवीय, परिवारिक सदस्यों सहित भारी संख्या में उनके स्नेहियो ने खुद परोस गिरी करके भंडारे की प्रसादी वितरण की। इस नगर भंडारे में नगर के लगभग सभी 15 वार्डो के गणमान्य नागरिक एवं मातृशक्ति उपस्थित थीं। वहीं क्षेत्र के पक्ष विपक्ष की नामचीन हस्तियों ने पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वहीं नगर के हर वर्ग के अलावा अन्य समुदाय के नागरिकों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति हुई।

श्रद्धांजलि सभा में पंचशील बुद्ध विहार को भेंट किया वाटर फ्रीजर

बैतूल। पंचशील बुद्ध विहार सदर में चंद्रशेखर वार्ड निवासी बाबूराव शेषकर द्वारा उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीय पुष्पा शेषकर की स्मृति में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान बाबूराव शेषकर एवं परिवार द्वारा पंचशील बुद्ध विहार प्रबंधन समिति की उपस्थिति में पानी का वाटर फ्रीजर भेंट किया गया, जिसे विहार में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए समर्पित किया गया। श्रद्धांजलि सभा में परिवारजनों एवं समिति के सदस्यों ने स्वर्गीय पुष्पा शेषकर को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में निधि शेषकर, निखिल शेषकर, वन्दना, विकल्प नागले, कुंती आठनेरे, मीना अतुलकर, हितेश बर्डे, मधुकर राव शेषकर, एनके मांडवे, बाबूराव शेषकर, हितेन्द्र शेषकर, एफ एल सरणकर, कमल घोघरकर, बलवंतराव शेषकर, मयंक बर्डे, डॉ मनोज वरवड़े, नरेश भूमरकर, रामदास पाटील, दिनेश मानकर सहित अन्य परिजन एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने स्वर्गीय पुष्पा शेषकर के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनके सामाजिक योगदान को याद किया। यह सुविधा उपासकों, भिक्षुओं और आमजन को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से समर्पित की गई।

फिर बढ़ी तारीख, किसानों को समर्थन मूल्य में खरीदी शुरू होने का इंतजार

अब 10 से समर्थन मूल्य में गेहूं और 16 से शुरू होगी सरसों की खरीदी

एस. द्विवेदी, बैतूल। 1 अप्रैल से शुरू होने वाली गेहूं और सरसों की खरीदी की तारीख फिलहाल बढ़ गई है। अब समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी 10 अप्रैल से और भावांतर योजना के तहत सरसों की खरीदी 16 अप्रैल से प्रारंभ होगी। गेहूं खरीदी को लेकर यह दूसरी बार परिवर्तन हुआ है। इससे पहले 16 मार्च से गेहूं खरीदी शुरू होने की संभावना थी, लेकिन यह तिथि बढक़र 1 अप्रैल कर दी गई। इसके बाद शासन ने पुन- खरीदी की तारीख बढ़ाकर 10 अप्रैल कर दी। उधर सरसो की खरीदी को लेकर भी यहीं हाल है। अब सरसो की खरीदी 1 अप्रैल की बजाए 16 अप्रैल से शुरू होगी। खरीदी को लेकर बार-बार तारीख बढ़ने से किसानों की चिंताएं बढ़ते जा रही है, क्योंकि किसानों के पास भंडारण की व्यवस्था नहीं है। ऊपर से मौसम भी साथ नहीं दे रहा है। मौसम बदलने और बारिश-हवा चलने के कारण उपज को सुरक्षित रखना किसानों के सामने चुनौतीपूर्ण बन गया है। किसानों का कहना है कि जिले की मंडियों में गेहूं के दाम 2100 से 2400 रुपए मिल रहे है। इसके चलते वे लंबे समय से समर्थन मूल्य पर खरीदी शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। कई किसानों ने फसल कटाई के बाद स्टॉक भी रोककर रखा है, ताकि उन्हें सरकारी दर पर बेहतर कीमत मिल सके। किन्तु बार-बार खरीदी की तारीख बढ़ने से किसानों के सामने समस्याएं उत्पन्न हो रही है। सबसे बड़ी समस्या भंडारण की है। किसानों के पास भंडारण की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण कई किसानों की उपज खेतों में खुले में पड़ी है। ऐसे में बारिश के कारण उपज भीगती है तो दाना काला पड़ने की संभावना रहेगी। जिससे किसानों का नुकसान उठाना पड़ेगा।

गेहूं के लिए 18969 और सरसों के लिए 2481 पंजीयन-जिले में समर्थन मूल्य पर गेहूं और सरसों बेचने के लिए इस बार बड़ी संख्या में किसानों ने अपना पंजीयन कराया है। बताया जा रहा है कि गेहूं बेचने के लिए 18969 किसानों और सरसों के लिए 2481 किसानों ने पंजीयन कराया है। इसके पीछे कारण यह है कि खुले बाजार (मंडी) में गेहूं के दाम 2100 से 2400 रुपये प्रति क्विंटल है, जबकि समर्थन मूल्य में गेहूं बेचने पर किसानों को समर्थन मूल्य 2585 रुपये और 40 रुपये प्रति क्विंटल बोनस मिलेगा। जिससे किसानों को प्रति क्विंटल 100 से 500 रुपये का फायदा होगी। वहीं खुले बाजार (मंडी) में सरसों के दाम समर्थन मूल्य से अधिक है। खुले बाजार में सरसो 6 हजार से 8 हजार प्रति क्विंटल चल रही है। जबकि भावांतर योजना में सरसो के दाम 6200 रुपये निर्धारित किये है और किसान भावांतर से कम दाम में उपज बेचता है तभी किसानों को भावांतर का लाभ मिलेगा, अन्यथा नहीं।

बार-बार बदलता मौसम किसानों के लिए परेशानी - मौसम में हो रहे बदलाव और कहीं-कहीं बारिश के कारण खुले में रखी उपज भीगने का खतरा बना हुआ है। बुधवार जिले के कई हिस्सों में ओले गिरे। तेज आंधी के साथ बारिश भी हुई। वहीं गुरुवार सुबह भी आसमान में काले बादल छाये रहे। हालांकि दोपहर में आसमान साफ हो गया, लेकिन मौसम को लेकर किसानों की चिंता बरकरार है। मौसम विभाग के अनुसार अरब सागर व बंगाल की खाड़ी से नमी, पश्चिमी विक्षोभ, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन के सक्रिय होने से प्रदेश का मौसम बदल रहा है। यह स्थिति आगामी दो-तीन दिन तक बनी रहने की संभावना है। इस दौरान कहीं-कहीं हल्की बारिश भी हो सकती है। किसानों का कहना है कि कहीं-कहीं गेहूं कटाई चल रही है। कुछ किसान गेहूं काटने के बाद दावन की तैयारी कर रहे है। ऐसे में मौसम में परिवर्तन के कारण फसल भीगने का खतरा बढ़ गया है।

अधिकारियों का कहना- तय तिथियों से शुरू होगी खरीदी प्रक्रिया- अधिकारियों का कहना है कि शासन ने समर्थन मूल्य में गेहूं की खरीदी की 10 अप्रैल कर दी है। तय तिथि से खरीदी केंद्रों पर पूरी व्यवस्था के साथ गेहूं खरीदी की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। किसानों को स्लॉट बुकिंग और टोकन व्यवस्था के माध्यम से बुलाया जाएगा, ताकि भीड़ नहीं लगे और खरीदी सुचारू रूप से हो सके। इधर जिला कलेक्टर ने भी अधिकारियों को निर्देशित किया है कि खरीदी केन्द्रों पर समुचित व्यवस्थाएं बनाई जाए, ताकि किसानों को खरीदी केन्द्रों पर किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े। अधिकारियों का कहना है कि जिले में पिछले साल की खरीदी के अनुसार बारदाने उपलब्ध है। जिले में गेहूं खरीदी के लिए 64 केन्द्र भी बनाये गये है। वहीं सरसो की खरीदी जिले की मंडियों में होना है।

इनका कहना है -शासन ने समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए तारीख बढ़ाकर 10 अप्रैल कर दी है। अब 10 अप्रैल से खरीदी होगी। जिले में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए 64 केन्द्र बनाये गये है।

- कृष्ण कुमार टेकाम, जिला आपूर्ति अधिकारी, बैतूल

सरसों खरीदी की तारीख बढ़ाकर शासन ने 16 अप्रैल कर दी है। जिले की मंडियों में भावांतर योजना के तहत सरसों की खरीदी की जायेगी। इस बार सरसों बेचने के लिए 2481 किसानों ने पंजीयन कराया है।

- आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

घोड़ाडोंगरी के ग्राम डुल्हारा में खनिज विभाग ने कोयला के अवैध उत्खनन से बने गड्ढों को किया बंद

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत खनिज विभाग बैतूल के खनिज अमले के द्वारा 31 मार्च 2026 को घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम डुल्हारा में स्थित तवा नदी क्षेत्र से खनिज कोयले के अवैध उत्खनन की सूचना प्राप्त होने पर आकस्मिक निरीक्षण किया गया। मौका निरीक्षण के दौरान नदी क्षेत्र से किसी भी व्यक्ति को खनिज कोयला का उत्खनन/परिवहन करते नहीं पाया गया, किन्तु 02 स्थानों पर अवैध रूप से कोयले का उत्खनन कर निकालने से बने ताजे गड्ढे पाए गये। उक्त स्थानों के आसपास कोयला के अवशेष एवं रखने के चिन्ह, निशान पाये गये। उक्त आकस्मिक जांच के दरम्यान रात्रि का समय हो जाने कारण गडढों को बंद करने की कार्यवाही

नहीं की जा सकी। उक्त क्षेत्र में खनिज कोयला के अवैध उत्खनन के संबंध में ग्रामीणों से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया, किन्तु उनसे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी। दूसरे दिन 1 अप्रैल 2026 को पुन- उक्त स्थल का निरीक्षण किया गया। जांच के दौरान तवा नदी क्षेत्र के अंदर बने एक गड्ढे को जेसीबी मशीन की सहायता से नदी की धारा को मोडक़र पानी तथा आसपास के मिट्टी, मुरूम, बोल्डर से भरकर बंद किया गया तथा दूसरा गड्ढा नदी के किनारे सुरंगनुमा संरचना का पाया गया, जिसे भी मिट्टी, मुरूम, बोल्डर से भरकर पूर्णतः बंद कराया गया। निरीक्षण के दौरान, उक्त स्थल के आसपास किसी भी व्यक्ति को खनिज कोयला का अवैध उत्खनन, परिवहन, भण्डारण करते नहीं पाया गया। गौरतलब है कि पूर्व के वर्षों में भी खनिज विभाग द्वारा उक्त स्थल से खनिज कोयला के अवैध उत्खनन, परिवहन, भण्डारण की रोकथाम के लिए कठोर कार्यवाही की गई थी। वर्तमान में भी उक्त क्षेत्र के आसपास खनिज कोयला के अवैध उत्खनन, परिवहन, भण्डारण की रोकथाम के लिए सतत निगरानी रखी जा रही है।

रीपर कम बाइंडर और स्ट्रॉ रीपर का किया जीवंत प्रदर्शन

कार्यशाला में किसानों को नरवाई न जलाने के लिए किया प्रेरित

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशन में कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा गुरुवार को जिले में नरवाई प्रबंधन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्राम भवानीतेड़ा एवं सेहरा में रीपर कम बाइंडर और स्ट्रॉ रीपर यंत्रों का जीवंत प्रदर्शन किया गया। इस दौरान कृषकों को आधुनिक कृषि यंत्रीकरण अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। ग्राम भवानीतेड़ा के कृषक रामचरण पवार एवं ग्राम सेहरा के कृषक गुलशन लिल्होरे ने रीपर कम बाइंडर के माध्यम से गेहूं की कटाई का प्रदर्शन किया। इस यंत्र से कटाई के बाद खेत में केवल 4-5 इंच नरवाई बचती है, जिससे नरवाई जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती और अगली फसल के लिए खेत जल्दी तैयार हो जाता है। कार्यक्रम में सहायक कृषि यंत्री डॉ. प्रमोद कुमार मीना ने कृषकों को यंत्रों के उपयोग एवं अनुदान प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी। वहीं ग्राम सेहरा में आयोजित कार्यशाला में स्ट्रॉ रीपर का फील्ड प्रदर्शन किया गया, जिसमें बताया गया कि कम्बाइन हार्वेस्टर से कटाई के बाद बची नरवाई को स्ट्रॉ रीपर के माध्यम से भूसे में परिवर्तित किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि स्ट्रॉ रीपर से प्रति एकड़ 15 से 50 किलो तक बचा हुआ गेहूं एकत्रित हो सकता है, जिससे कृषकों को 375 से 1250 रुपये तक अतिरिक्त लाभ मिलता है। साथ ही तैयार भूसा बाजार में करीब 2000 रुपये प्रति ट्रॉली तक बिकता है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।

आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग के लिए किया प्रेरित - कार्यशाला के दौरान विभाग द्वारा कृषकों से नरवाई न जलाने की अपील करते हुए स्ट्रॉ रीपर, रीपर कम बाइंडर, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, रोटावेटर एवं मल्चर जैसे आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग पर जोर दिया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्रीमती अलका कोड़पे, कृषि विस्तार अधिकारी श्री कलमे, तकनीकी शाखा प्रभारी श्री इंद्रभान सिंह सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में कृषक उपस्थित रहे।

रिश्तों का कत्ल : बहू ने की सास की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

घरेलू विवाद में लकड़ी से किया था हमला, परिवार के तीन सदस्य घायल

बैतूल। घरेलू विवाद किस हद तक भयावह रूप ले सकता है, इसका ताजा उदाहरण मुलताई क्षेत्र में सामने आया है। पारिवारिक कलह के चलते एक बहू ने अपनी ही सास पर लकड़ी से हमला कर दिया, जिससे गंभीर रूप से घायल 82 वर्षीय वृद्धा की उपचार के दौरान मौत हो गई। इस घटना में दो अन्य लोग भी घायल हुए हैं। पुलिस ने आरोपी बहू को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है। पुलिस प्रेस नोट से प्राप्त जानकारी के अनुसार, फरियादिया शारदा पति शिवराम चिकाने (उम्र 55 वर्ष), निवासी ग्राम पिपरिया, थाना मुलताई ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि घटना वाले दिन सुबह लगभग 9 बजे आरोपी रश्मि पति रामेश्वर चिकाने (उम्र 47 वर्ष) उनके घर के सामने आई और बिना किसी ठोस कारण के लकड़ी से उनके सिर पर हमला कर दिया, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं। फरियादिया के अनुसार, आरोपी ने इससे पहले अपनी सास प्रमिला बाई चिकाने (उम्र 82 वर्ष) के साथ भी मारपीट की थी। हमले में प्रमिला बाई को गंभीर चोटें आईं, जिन्हें पहले मुलताई अस्पताल और बाद में गंभीर हालत में एम्स अस्पताल भोपाल रेफर किया जहां उपचार के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। इस हिंसक घटना में दिनेश पाठेकर एवं कलश पाठेकर भी घायल हुए, उन्हें प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया।

हत्या की धारा जोड़ी गई, आरोपी गिरफ्तार - प्रारंभिक रिपोर्ट के आधार पर थाना मुलताई में अपराध क्रमांक 115/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 115(2) एवं 351(3) में प्रकरण दर्ज किया गया था। बाद में मर्ग जांच और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह स्पष्ट हुआ कि प्रमिला बाई की मृत्यु मारपीट में आई चोटों के कारण हुई है। इसके आधार पर मामले में धारा 103(1) बीएनएस (हत्या) भी जोड़ी गई। थाना मुलताई पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया और घटना में प्रयुक्त लकड़ी (आलाजरब) भी जब्त कर ली। आरोपी को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

पारिवारिक विवादों का हिंसक रूप लेना चिंताजनक: एसपी वीरेंद्र जैन- पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेन्द्र जैन ने घटना पर चिंता व्यक्त करते कहा कि पारिवारिक विवादों का इस प्रकार हिंसक रूप लेना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और समाज के लिए चिंताजनक है। परिवार समाज की मूल इकाई है, जहां संवाद, समझ और सम्मान बेहद जरूरी हैं। उन्होंने अपील की कि किसी भी प्रकार के पारिवारिक तनाव या विवाद की स्थिति में कानून को हाथ में लेने के बजाय आपसी बातचीत, समझाइश और कानूनी माध्यमों का सहारा लें।

ग्राम पंचायत बडोरा में सापना नदी घाट पर चलाया स्वच्छता अभियान

बैतूल। जल गंगा संवर्धन अभियान 2026 के अंतर्गत ग्राम पंचायत बडोरा में सापना नदी घाट पर

जनसमुदाय की सक्रिय भागीदारी से स्वच्छता अभियान चलाया गया। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने कार्यक्रम के दौरान सुरक्षित कल-समृद्ध कल का संदेश दिया। इस अवसर पर उपस्थित सभी ग्रामीणों ने जल संरक्षण का संकल्प लेते हुए पानी की हर एक बूंद को बचाने का प्रण लिया। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत बडोरा की सरपंच श्रीमती सविता धुर्वे ने जल संरक्षण के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। अभियान के तहत जल स्रोतों की साफ-सफाई एवं पूजन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत माता मंदिर के पास घाट पर की गई। साथी हाथ बढ़ाना की भावना के साथ जनसहयोग से यह पुनीत कार्य संपन्न हुआ। जल के प्रति जन जागरूकता के लिए आयोजित इस श्रमदान में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के परामर्शदाता राजू बी.आठनेरे, आशीष कोंकने, जन अभियान परिषद के परामर्शदाता, नवांकुर संस्था अंश सेवा समिति,भूपेंद्र महिला एवं बाल उत्थान समिति के सदस्य समाजसेवी अरविंद धुर्वे, रोहित चौकीकर, रामकिशोर पवार, संजय माकोड़े, उमेश डांगे, ओमकार भारती, जनप्रतिनिधि, सीएमसीएलडीपी के छात्र-छात्राएं एवं ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नाबालिग का अपहरण कर डेढ़ लाख में बेचा

पुलिस ने तीन आरोपियों को किया गिरफ्तार, एक फरार

बैतूल। 17 वर्षीय नाबालिग बालिका के अपहरण और उसे बेचने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि एक आरोपी अभी फरार है। थाना मोहदा क्षेत्र में 4 नवंबर 2025 को शाम करीब 7 बजे नाबालिग बालिका घर से लापता हो गई थी। परिजनों ने आशंका जताई थी कि उसे किसी अज्ञात व्यक्ति ने बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक वीरेन्द्र जैन के निर्देशन में विशेष टीम बनाई गई। जांच के दौरान पता चला कि मुख्य आरोपी सागर दशपुरे बालिका को अपने साथ महाराष्ट्र ले गया था। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 19 मार्च 2026 को बालिका को सकुशल बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन उसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया। जांच के दौरान पुलिस को बड़ा खुलासा हुआ कि आरोपी ने बालिका को 1 लाख 50 हजार रुपये में बेच दिया था।

नगर हुआ हनुमंत लाल मय, जगह-जगह भंडारे

सोहागपुर । इस साल नगर ने हनुमान जयंती के अपने पुराने कीर्तिमानों को ध्वस्त कर दिया है। जगह-जगह भंडारों के कारण पूरा नगर हनुमंत लाल मय हो गया था।इधर नगर के समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद, ग्राम शोभापुर,मनकवाढा आदि ग्रामों में हनुमान जयंती के भंडारे आयोजित करने के समाचार हैं। समाजसेवी कन्नू लाल अग्रवाल ने जमनी सरोवर स्थित हनुमान मंदिर में गुलशन महराज के सानिध्य में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया था। जिसमें नामचीन नागरिकों, जनप्रतिनिधियों के अलावा गणमान्य नागरिकों के भंडारे की प्रसादी ग्रहण की। स्टेशन रोड स्थित बालक हनुमान मंदिर में प्रतिमा स्थापित होने के समय से निरंतर वरिष्ठ पत्रकार हीरालाल गोलानी एवं गोलानी परिवार भंडारे का आयोजन करता आ रहा है।आज भंडारे के अवसर पर बावड़ी मंदिर महंत हरिकिशनदास जी, भाजपा वरिष्ठ नेत्री सुश्री राजो मालवीय जनपद पंचायत अध्यक्ष जालमसिंह पटेल, उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह पटेल, पूर्व नपाध्यक्ष अध्यक्ष राजेंद्रसिंह चौधरी, पूर्व नपाध्यक्ष अध्यक्ष संतोष मालवीय, पूर्व कृषि मंडी अध्यक्ष राजा भैया पटेल,भाजपा नेता कृष्णा पालीवाल, व्यापारी संघ अध्यक्ष राजेंद्र पालीवाल, नगर कांग्रेस अध्यक्ष प्रशांत जायसवाल,नीरज

चौधरी, युवक कांग्रेस नेता चौरसिया, जन अभियान परिषद के ब्लाक समन्वयक किशोर कड़ोले पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, वरिष्ठ पत्रकार अनूप मित्तल सेमरी हरचंद पूर्व पत्रकार संघ अध्यक्ष देवेंद्र कुशवाहा,पत्रकार रीतेश साहू, पत्रकार आनंद पाराशर, देवेन्द्र पटेल रामनगर,हिमांशु पटेल ठीकरी, किसान कांग्रेस नगर अध्यक्ष समाजसेवी गणेश अहिरवार, भाईजी अहिरवार ईश्वरपुर, पूर्व पार्षद अन्ना काका, पूर्व पार्षद मोहन कहार, समाजसेवी संजय खंडेलवाल, प्राचार्य धनराज तिवारी,चौबे जी, प्रशांत साहू, पूर्व फौजी नीलम पटेल, पूर्व फौजी राजेश रघुवंशी,नगरपालिका के बृजेश खानोकर सहित समस्त विभागों के कर्मचारियों सहित गणमान्य नागरिक एवं भारी संख्या में मातृशक्ति ने भंडारे की प्रसादी ग्रहण की।

महंत हरिकिशनदास जी समाजसेवी विशाल गोलानी गमछा ओढ़ाकर सम्मानित किया। पंडितजी सुनील भार्गव एवं भाई साहब ताराचंद कलतारी का गमछा ओढ़ाकर सम्मानित किया। इसके पूर्व पंडित सुनील भार्गव ने जिजमान हीरालाल गोलानी से हनुमान जयंती की विशेष पूजा अर्चना कराई। उक्त पूजन अर्चना करीबन दो घंटे से अधिक समय तक हुई। बालक हनुमान मंदिर में सैकड़ों नागरिक, मातृशक्ति ने भंडारे की प्रसादी ग्रहण की। इधर न्यायालय परिसर में भी विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें न्यायाधीश महोदय, अधिवक्ताओं सहित कई गणमान्य नागरिक ने भंडारे की प्रसादी ग्रहण की। माता पुरा में शरद योगी उर्फ़ चप्पू के सानिध्य में प्रतिवर्षानुसार इस साल भी विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। पुराने पुलिस थाने के पीछे काली मंदिर परिसर में भगवानदास गोलू ने हनुमान जयंती पर भंडारे का आयोजन किया था। इधर मुख्य बाजार में धम्मी चौरसिया, मिश्रीलाल साहू आदि के सानिध्य में शाम से भंडारे का आयोजन किया था। इधर जवाहर वार्ड एवं रघुवंशीपुरा में भी हनुमंत लाल के भंडारे का आयोजन किया गया था। कमानिया गेट स्थित हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना के उपरांत निरंतर प्रसाद वितरण किया गया। इधर नगर के लगभग सभी हनुमंत लाल मंदिरों में विशेष पूजा अर्चना एवं भंडारे एवं प्रसादी प्रदान करने की सूचनाएं हैं।

राजकोट-रीवा एक्सप्रेस में बढ़ेगा थर्ड एसी कोच

- 24 और 25 मई से लागू होगी नई व्यवस्था, समर सीजन में भीड़ प्रबंधन में मिलेगी मदद

भोपाल (नप्र)। समर सीजन में बढ़ती यात्री संख्या को देखते हुए रेलवे ने सुविधाएं बढ़ाने की दिशा में अहम फैसला लिया है। इसी क्रम में भोपाल मंडल से होकर गुजरने वाली राजकोट-रीवा-राजकोट एक्सप्रेस ट्रेन में एक अतिरिक्त थर्ड एसी कोच जोड़ने का निर्णय लिया गया है, जिससे यात्रियों को राहत मिलने की उम्मीद है।

इन तारीखों से लागू होगी व्यवस्था

रेलवे के अनुसार, गाड़ी संख्या 22937 राजकोट-रीवा एक्सप्रेस में 24 मई 2026 से एक थर्ड एसी कोच जोड़ा जाएगा। वहीं, गाड़ी संख्या 22938 रीवा-राजकोट एक्सप्रेस में 25 मई 2026 से यह सुविधा प्रभावी होगी। अतिरिक्त कोच जुड़ने के बाद दोनों ट्रेनों में कुल 22 कोच होंगे। इनमें 1 फर्स्ट एसी, 2 सेकंड एसी, 5 थर्ड एसी, 2 थर्ड एसी इकॉनमी, 6 स्लीपर क्लास, 4 जनरल कोच, 1 जनरेटर कार और 1 एसएलआरडी कोच शामिल रहेगा।

यात्रियों को मिलेगा सीधा लाभ

रेलवे अधिकारियों के मुताबिक, अतिरिक्त एसी कोच जुड़ने से न सिर्फ यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलेगी, बल्कि भीड़ प्रबंधन भी संतुलित रहेगा। यात्रियों से अपील की गई है कि यात्रा से पहले ट्रेन की जानकारी रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट, एनटीईएस और रेल मदद 139 के माध्यम से जरूर जांच लें।

प्रदेश में 5 अप्रैल तक ओले आंधी-बारिश का दौर

भोपाल-इंदौर समेत 30 जिलों में बारिश का अलर्ट, निमाड़ में ओले गिरेंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में आंधी-बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से पिछले 72 घंटे से तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि का दौर चल रहा है। बुधवार को प्रदेश के आधे हिस्से में मौसम बदला रहा। वहीं, गुरुवार को भोपाल, इंदौर समेत 30 जिलों में बारिश का अलर्ट है, जबकि निमाड़ के धार, बड़वानी और झाबुआ में ओले भी गिर सकते हैं। अगले 24 घंटे के दौरान जिन जिलों में बारिश हो सकती है, उनमें ग्वालियर, भोपाल, इंदौर, उज्जैन, मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, नीमच, मंदसौर, रतलाम, अलीराजपुर, झाबुआ, धार, बड़वानी, आगर-मालवा, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, देवास, शाजापुर शामिल हैं।

50 किमी प्रति घंटा से चलेगी आंधी

मौसम विभाग के अनुसार, गुरुवार को छिंदवाड़ा, सिवनी और पांढुर्णा में तेज आंधी चलेगी। इसकी रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा तक रह सकती है। बाकी जिलों में 30 से 40 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चलेगी। इससे पहले बुधवार को भोपाल में गरज-चमक के साथ बारिश हुई।

डीआर की अवधि में कटौती असंवैधानिक

भोपाल। पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन ने शासकीय सेवकों को 1 जुलाई 25 से एवं पेंशनरों को देय अवधि में 6 माह की कटौती कर 1 जनवरी 2026 से 3 प्रतिशत महंगाई राहत आदेश को असंवैधानिक बताया हैद्य एसोसिएशन के संरक्षक गणेश दत्त जोशी एवं प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने कहा कि डी आर की अवधि में कटौती हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पश्चिम बंगाल के कर्मचारियों के संदर्भ में दिए गए निर्णय की स्पष्ट अवमानना है । भोपाल जिले के अध्यक्ष सुरेश शर्मा ने कहा कि डी आर की अवधि में कटौती करने का सरकार के पास ना तो कोई नियम है और न ही अधिकार ।सक्सेना ने मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के मुख्य एवं वित्त सचिव को नाम से पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि महंगाई राहत की अवधि में कटौती संवैधानिक व्यवस्था के प्रतिकूल है एवं सरकार जानबूझकर वृद्ध पेंशनरों को आर्थिक जटिलताओं में जीवन यापन करने के लिए विवश कर रही है।एसोसिएशन के प्रांतीय उपाध्यक्ष संतोष ठाकुर, शैलेंद्र नाथ श्रीवास्तव, प्रांतीय सचिव रामगोपाल माथुर एवं यशवंत सिंह वैस ने कहा कि मध्य प्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 एकीकृत मध्य प्रदेश के पेंशनरी दायित्वों के प्रभाजन पर लागू है ना कि उत्तरवर्ती पेंशनरी दायित्वों परद्य एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने सरकार से विगत 81 माह के बकाया महंगाई राहत का 18 प्रतिशत ब्याज के साथ भुगतान करने की मांग की है ।

कोलार-विजय नगर में शराब दुकान शिफ्टिंग का विरोध

धरने पर बैठीं महिलाएं, भजन-कीर्तन कर रहीं, कोलार में दुकान के सामने जुटे लोग

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में दो शराब दुकानों की शिफ्टिंग का मामला तूल पकड़ रहा है। ये दुकानें कोलार रोड और विजय नगर में हैं। कोलार रोड स्थित मंदाकिनी चौराहे पर दुकान शिफ्ट होने पर कई लोग दुकान के सामने ही इकट्ठा हो गए और नारेबाजी की। वहीं, विजय नगर में दुकान के सामने ही टेंट लगाकर महिलाएं भजन-कीर्तन कर रही हैं। पुलिस ने महिलाओं को समझाने की कोशिश की, लेकिन वे मानने को तैयार नहीं है। उनकी मांग है कि जब तक दुकान शिफ्ट नहीं होती, तब तक वे सड़क पर ही बैठीं रहेंगी।

हालांकि, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह दुकान को हटाने के निर्देश दे चुके हैं, लेकिन दुकान नहीं हटी। विजय नगर स्थित सांईराम कॉलोनी की दुकान को हटाने के लिए लोग पिछले एक साल से जनसुनवाई में आवेदन दे रहे हैं। बावजूद दुकान नहीं हटाई जा सकी। प्रदर्शन के दौरान महिलाओं के साथ कई युवा भी शामिल हैं।

कोलार रोड पर रहवासी इलाके व मंदिर के पास शिफ्ट हुई दुकान- कोलार रोड पर भी एक शराब दुकान की शिफ्टिंग का मामला तूल पकड़ रहा है। पहले दुकान सर्वधर्म इलाके में थी, जो अब मंदाकिनी चौराहे पर शिफ्ट कर दी गई है। इसके ठीक पीछे जैन मंदिर है और रहवासी इलाका है। इसके चलते लोग विरोध में उतर गए हैं। बुधवार रात उन्होंने दुकान के सामने प्रदर्शन किया। वहीं, गुरुवार को कलेक्टर से मिलने जाएंगे।

इस मुद्दे पर रहवासियों के साथ कांग्रेसी भी मैदान में उतर गए हैं। कोलार कांग्रेस अध्यक्ष राहुल सिंह राठौड़ ने विरोध दर्ज कराते हुए कोलार थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा और दुकान को तुरंत हटाने की मांग की। राठौड़ ने बताया कि कोलार रोड के सबसे प्रमुख स्थान मंदाकिनी चौराहे पर मंदाकिनी जैन मंदिर के पीछे ही शराब दुकान खुल गई है। शराब दुकान खुलने के पहले ही दिन चौराहे के आसपास जाम लग गया। पास में ही मंदाकिनी जैन मंदिर, रहवासी इलाका है।

सर्वधर्म पुल के पास शिफ्ट हो दुकान- राठौड़ ने बताया कि गुरुवार को कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह से मुलाकात करेंगे। इस वाइन शॉप को मंदाकिनी चौराहे के साथ सर्वधर्म कॉलोनी से भी हटाने की मांग करेंगे। सर्वधर्म पुल के पार नई दुकानें बनी हैं। शराब दुकान को वहां पर शिफ्ट किया जाए।

लोगों ने बैठक की- मंदाकिनी चौराहे पर शराब दुकान की शिफ्टिंग को लेकर आम लोग भी विरोध जता रहे हैं। इसे लेकर गुरुवार सुबह उन्होंने मीटिंग की। जिसमें दुकान को अन्य ऐसी जगह पर शिफ्ट करने का निर्णय लिया गया, जहां रहवासी इलाका, स्कूल या मंदिर न हो।

कूटरचित दस्तावेजों के जरिए फर्जी लोन स्वीकृत कर राशि हड़पी

भोपाल (नप्र)। बैंकिंग प्रणाली में भरोसे को झटका देने वाले मिसरोद शाखा भ्रष्टाचार मामले में सीबीआई कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए तत्कालीन शाखा प्रबंधक पियूष चतुर्वेदी और सहअभियुक्त मोहनसिंह सोलंकी को दोषी ठहराया है। सीबीआई प्रकरणों की सुनवाई कर रही अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नीलम शुक्ला की अदालत ने दोनों को विभिन्न धाराओं में 7-7 वर्ष के कठोर कारावास सहित जुर्माने की सजा सुनाई।

2014 में फर्जीवाड़ा, 2016 में हुई शिकायत- मामला जुलाई 2014 का है, जब बैंक ऑफ इंडिया की मिसरोद शाखा में पदस्थ शाखा प्रबंधक ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर कई व्यक्तियों और फर्मों के नाम पर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर टर्म लोन और कैश क्रेडिट लिमिट स्वीकृत की। इन खातों से संबंधित वास्तविक खाताधारकों को इसकी जानकारी तक नहीं दी गई और रकम आहरित कर ली गई। इस अनियमितता की शिकायत वर्ष 2016 में सीबीआई एसीबी भोपाल को दी गई, जिसके बाद विस्तृत जांच शुरू हुई।

'विजन कम्प्यूटर' के नाम पर 12.5 लाख का खेल- जांच में सामने आया कि आरोपियों ने 'मेसर्स विजन कम्प्यूटर' के नाम पर 12.50 लाख रुपए का ऋण स्वीकृत किया। इसके लिए कूटरचित दस्तावेजों का उपयोग किया गया और बाद में यह राशि खाताधारक की जानकारी के बिना मोहनसिंह सोलंकी द्वारा संचालित अन्य फर्म के खाते में ट्रांसफर कर दी गई।

डेटा साइंटिस्ट, प्रोफेसर, इंजीनियर कांग्रेस प्रवक्ता बनने की कतार में

- आईआईटियंस बोले- सरकारें बोलने की आजादी छीन रहीं, संघर्ष में कांग्रेस की मदद करना है

भोपाल (नप्र)। एमपी में दलबदल के कारण कांग्रेस को सरकार गंवानी पड़ी थी। पिछले एक दशक में मंत्रियों, विधायकों से लेकर तमाम दिग्गज पार्टी छोड़कर बीजेपी में शामिल हो चुके हैं। अब कांग्रेस टैलेंट हंट के जरिए प्रवक्ता, रिसर्च कॉर्डिनेटर और सोशल मीडिया के लिए टीम खोज रही है। कांग्रेस के इन पदों के लिए प्रदेश भर से करीब 5 हजार लोगों ने आवेदन किए हैं। इनमें से एक हजार लोगों को शॉर्टलिस्ट करके उनके इंटरव्यू किए जा रहे हैं। कांग्रेस प्रवक्ता, रिसर्च कॉर्डिनेटर और सोशल मीडिया टीम में शामिल होने के लिए इंजीनियर, वकील, लेखक, कवि, प्रोफेसर से लेकर डेटा साइंटिस्ट और आईआईटी पास आउट युवाओं ने ऑनलाइन आवेदन किए हैं।

पिता डिस्टिक्ट जज और मां प्रोफेसर रहीं

स्वराज ने कहा- मैं ये बताना चाहता हूं कि मेरे जीवन के मूल्य हैं जो मेरे माता पिता ने मुझे बचपन से सिखाए हैं। मेरे पिता कानून के बहुत अच्छे ज्ञाता हैं वो डिस्टिक्ट जज रहे हैं। उन्होंने मुझे संविधान का महत्व बचपन से सिखाया है। वो कहते हैं कि संविधान में सबसे महत्वपूर्ण धारा आर्टिकल 19/1ए के तहत अभिव्यक्ति की आजादी है।

आईआईटी पासआउट स्वराज बोले

कांग्रेस हमारी शिक्षा और नॉलेज को समझेगी

सीधी जिले के चुरहट के रहने वाले स्वराज सिंह बघेल ने मीडिया को बताया मैं 2012 बैच का आईआईटी रूडकी से पास आउट हूं। उसके बाद मैंने कुछ समय तक कॉर्पोरेट सेक्टर में नौकरी की। यूपीएससी की तैयारी भी की। उसके बाद से कांग्रेस पार्टी से जुड़ा हुआ हूं। लोगों ने मुझसे पूछा कि ऐसी प्रोफाइल लेकर आप कांग्रेस पार्टी से ही क्यों जुड़े जबकि आपके पास कई और अच्छे अवसर थे।

खंडवा का जांबाज स्नेक कैचर आशिक हारा जिंदगी की जंग

सांप को डिब्बे में बंद कर पहुंचा अस्पताल, फिर भी नहीं बचा

खंडवा (नप्र)। मध्यप्रदेश के खंडवा जिले से एक ऐसी खबर सामने आई है, जिसने हर किसी को झकझोर कर रख दिया है। इलाके के जाने-माने स्नेक कैचर आशिक मंसूरी, जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर अब तक 1000 से ज्यादा सांपों को पकड़ा और लोगों को जीवनदान दिया, मंगलवार रात खुद काल का ग्रास बन गए। बरुड़ गांव में एक जहरीले सांप को रेस्क्यू करते समय हुई एक मामूली सी चूक उनके जीवन पर भारी पड़ गई।

अंतिम समय में भी दूसरों की थी फिक्र- भोज्याखेड़ी निवासी आशिक मंसूरी की बहादुरी का आलम यह था कि सांप के डसने के बाद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने न केवल उस जहरीले नाग को काबू किया, बल्कि उसे एक प्लास्टिक के पीपे में सुरक्षित बंद भी किया। इसके बाद वे खुद उस पीपे को लेकर मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचे। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, अस्पताल में उस वक्त अफरा-तफरी मच गई जब पीपे के अंदर बंद सांप उग्र होकर फन मारने लगा और पूरा डब्बा हिलने लगा। लोग दहशत में थे, लेकिन आशिक शांत थे।

12 बजे थमीं सांसें, अस्पताल में उमड़ी भीड़- डॉक्टरों ने आशिक को तुरंत एंटी-स्नेक वेनम दिया और आईसीयू में शिफ्ट किया। हालांकि, सांप इतना जहरीला था कि जहर फेफड़ों और नसों तक तेजी से फैल चुका था। डॉक्टरों की तमाम कोशिशों के बावजूद मंगलवार रात करीब 12 बजे उन्होंने दम तोड़ दिया। जैसे ही उनकी मौत की खबर फैली, अस्पताल परिसर में उनके चाहने वालों और रिश्तेदारों का हुजूम उमड़ पड़ा। आशिक भाई के लिए सांप पकड़ना पेशा नहीं, सेवा थी। वे बिना किसी शुल्क के आधी रात को भी फोन आने पर गांव-गांव पहुंच जाते थे। जिस हुनर ने उन्हें पहचान दिलाई, उसी जोखिम ने आज उन्हें हमसे छीन लिया।

पन्ना टाइगर रिजर्व एरिया से ढाई साल की बच्ची रहस्यमयी तरीके से गायब!

- पुलिस-वन विभाग टीमें कर रहीं सर्चिंग

पन्ना (नप्र)। एमपी के पन्ना टाइगर रिजर्व की सुनैहरा बीट से आज एक दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है। यहां के टपरियन हार इलाके से एक ढाई साल की मासूम बच्ची रहस्यमयी ढंग से लापता हो गई है। घटना के बाद से पूरे इलाके में हड़कंप मचा हुआ है। वन विभाग के साथ-साथ पुलिस बल भी हाई अलर्ट पर है।

महुआ बीनने गए थे माता-पिता, तभी घटी घटना- दो साल की मासूम बच्ची पलक आदिवासी के पिता अमर आदिवासी के अनुसार, वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ जंगल से सटे अपने खेत में महुआ बीनने गए थे। खेत जंगल के काफी करीब है, जहां उन्होंने अपनी एक छोटी सी टपरिया (झोपड़ी) भी बना रखी है। जब माता-पिता काम में व्यस्त थे, तभी अचानक उनकी मासूम बच्ची ओझल हो गई।

लौटकर आए तो नहीं मिली मासूम- रेंजर अजय बाजपेयी ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और वन विभाग की टीमें मौके पर पहुंच गई हैं। इलाके में बाघों और अन्य हिंसक जानवरों की मौजूदगी को देखते हुए आशंका जताई जा रही है कि कोई जंगली जानवर बच्ची को उठा ले गया होगा। हालांकि, अभी तक कोई ठोस साक्ष्य या सुराग हाथ नहीं लगा है। रेंजर, वन विभाग अजय बाजपेयी ने बताया कि पन्नुनैहरा बीट से ढाई साल की मासूम बच्ची के गायब होने की सूचना के बाद पूरे इलाके में सर्चिंग चल रही है। पुलिस-वन विभाग की डॉग स्क्वाड और ग्रामीण सभी तलाश में जुटे हैं, इलाके में बाघों व अन्य जानवरों की मौजूदगी भी रहती है।

डॉग स्क्वॉड और सर्च टीमें तैनात- बच्ची की तलाश में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। मौके पर पन्ना टाइगर रिजर्व का विशेष डॉग स्क्वॉड तैनात किया गया है। वही पुलिस विभाग का डॉग स्क्वॉड भी सर्चिंग में जुटा है। इसके साथ ही पूरे गांव के लोग और वन विभाग का अमला झाड़ियों और घने जंगलों की खाक छान रहा है।

टीमें संयुक्त रूप से सर्च ऑपरेशन चला रही

रेंजर का कहना है कि हमें पन्ना टीआई रोहित मिश्रा के माध्यम से सूचना मिली थी कि सुनैरा बीट के कक्ष क्रमांक पी-443 से एक बच्ची लापता है। पुलिस और हमारी टीमें संयुक्त रूप से सर्च ऑपरेशन चला रही हैं। फिलहाल कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी, जांच जारी है। बता दें कि पन्ना के इन जंगलों में बाघों की सक्रियता हमेशा बनी रहती है, ऐसे में मासूम की सुरक्षा को लेकर हर कोई दुआ कर रहा है।

कैंसर से बचाने में भी इंदौर-भोपाल फिसड्डी

इंदौर में सिर्फ 4 प्रतिशत किशोरियों को लगी एचपीवी वैक्सीन, 70 प्रतिशत के साथ डिंडौरी आगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए चलाए जा रहे एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान की ताजा रिपोर्ट चौंकाने वाली तस्वीर पेश करती है। जहां एक तरफ डिंडौरी, बालाघाट और राजगढ़ जैसे जिले 70 से 79 प्रतिशत तक कवरेज के साथ टॉप पर हैं, वहीं बड़े शहर इस दौड़ में पीछे छूट गए हैं। इंदौर महज 3.96 प्रतिशत कवरेज के साथ सबसे आखिरी स्थान पर है, जबकि राजधानी भोपाल भी 12.65 प्रतिशत के साथ 43वें स्थान पर पहुंच गया है।

यह स्थिति बताती है कि जागरूकता और संसाधनों के बावजूद बड़े शहरों में अभियान अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रहा। खास बात यह है कि बड़े शहर सिर्फ स्वास्थ्य के क्षेत्र में नहीं बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछड़ते जा रहे हैं।

इसी तरह का ट्रेंड हाल में जारी हुए 5वीं-8वीं के बोर्ड एग्जाम के दौरान देखने को मिला।

देश के टॉप स्टेट में शामिल है मध्यप्रदेश- राज्य स्तर पर एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान का कुल लक्ष्य 8 लाख 3 हजार 684 किशोरियों को टीका लगाने का है। अब तक 2 लाख 8 हजार 873 का टीकाकरण हो चुका है, जो कुल लक्ष्य का लगभग 25.99 प्रतिशत है। राष्ट्रीय स्तर पर मध्यप्रदेश का प्रदर्शन बेहतर है। टॉप स्टेट्स में एमपी शामिल है। हालांकि, शहरी क्षेत्रों के आंकड़े इस प्रदर्शन को कमजोर बना रहे हैं।

हर साल सवा लाख महिलाएं आ रहीं चपेट में- भारत में हर साल करीब 1.25 लाख महिलाएं सर्वाइकल कैंसर की चपेट में आती हैं और लगभग 75 हजार महिलाओं की मौत हो जाती है। यह बीमारी धीरे-धीरे विकसित होती है और शुरुआती चरण में अक्सर लक्षण नहीं दिखते। डॉक्टरों का कहना है कि किशोरावस्था में वैक्सीनेशन भविष्य में इस बीमारी से बचाव का सबसे सुरक्षित और प्रभावी तरीका है।

कांग्रेस के कमलनाथ ने किया मोदी सरकार का बचाव

बोले-गैस की कमी नहीं है ये माहौल बना दिया

छिंदवाड़ा (नप्र)। कांग्रेस के कमलनाथ ने देश में एलपीजी गैस और पेट्रोलियम की क्राइसिस को लेकर पहली दफा खुलकर बोला है। पूर्व सीएम ने मोदी सरकार का बचाव करते हुए कहा कि, देश में गैस की परेशानी नहीं है, केवल व्यवस्था की गड़बड़ी है। क्राइसिस का माहौल बना दिया है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ गुरुवार को छिंदवाड़ा पहुंचे। सुबह वे इमलीखेड़ा स्थित हवाई पट्टी पर उतरे, जहां बड़ी संख्या में कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। एयरस्ट्रिप पर स्वागत के दौरान कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। इस दौरान उनके साथ पूर्व सांसद नकुलनाथ भी मौजूद रहे।

गैस किल्लत पर बोले-अव्यवस्था से बना संकट का माहौल- कमलनाथ ने गैस सिलेंडर की कथित किल्लत के मुद्दे पर बड़ा बयान दिया। उन्होंने प्रशासन का बचाव करते हुए कहा कि गैस की कोई वास्तविक कमी नहीं है। यह सिर्फ वितरण व्यवस्था में अव्यवस्था का नतीजा है, जिससे लोगों के बीच भ्रम की स्थिति पैदा हो गई है। उन्होंने कहा कि सप्लाई पर्याप्त है, लेकिन सही तरीके से वितरण नहीं होने के कारण लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

शोक यात्रा में शामिल होने पहुंचे- कमलनाथ ने अपने दौरे का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया कि वे छिंदवाड़ा एक शोक यात्रा में शामिल होने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा कि यह उनका व्यक्तिगत कार्यक्रम है, जिसमें वे दिवंगत व्यक्ति के परिजनों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त करेंगे।

मध्यप्रदेश शासन

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

भारत के स्वाभिमान
नवजागरण और विकास
की यात्रा का उत्सव

महानाट्य
सम्राट विक्रमादित्य
शुभारंभ

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

3 अप्रैल 2026 I विक्रम सम्वत् 2083, वैशाख कृष्ण पक्ष
सायं 7.00 बजे, बी.एल.डब्ल्यू. मैदान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

3 से 5 अप्रैल 2026, प्रतिदिन सायं 7.00 बजे

प्रदर्शनियाँ
आर्ष भारत, सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या
शिव पुराण, चौरासी महादेव, श्रीहनुमान एवं मध्यप्रदेश के पवित्र स्थलों की प्रदर्शनी
पूर्वरंग : सायं 6.30 बजे से
मध्यप्रदेश के लोक नृत्य
स्वाद
देशज व्यंजनों का मेला

बाबा महाकाल के अनन्य सेवक
डॉ. मोहन यादव
द्वारा बाबा विश्वनाथ को सादर समर्पित
भारत का समय - पृथ्वी का समय
विक्रमादित्य वैदिक घड़ी

आप आदरपूर्वक आमंत्रित हैं।

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आयोजक :
संस्कृति, पर्यटन, जनसंपर्क विभाग, मध्यप्रदेश शासन
महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, उज्जैन

सहयोग :
जिलाधिकारी वाराणसी
उत्तर प्रदेश सरकार

D-11001/26